अनायत

क्रैस्ट कॉलेज (स्वायत्त), इरिङालकुडा | हिंदी विभाग, ई- पत्रिका 2021 - 2022 ।

अनायत

जहाँ न रहती है हिमायत
वहाँ रहती है अनायत |

हिंदी मंच अनायत

विषय सूची

- प्राचार्य का संदेश
- संपादकीय
- आभार
- भूमिका
- रचनाएँ

प्राचार्य का संदेश

प्रिय छात्रों,
यह बड़ी खुशी की बात है कि क्राइस्ट कॉलेज के हिंदी विभाग 'अनायत ' नामक इ-पत्रिका का प्रकाशन करने को आगे बढ़े हैं । मैं हिंदी विभाग के सभी अध्यापकों और छात्रों को सच्चे मन से प्रशंसा करता हूँ , जिन्होंने इस पत्रिका को सफल बनाने में प्रयत्न किया । जो व्यक्ति अपने विचारों को सृजनात्मक रूप देता है तब उसका मन शांत हो जाता है ।सबसे अच्छी बात यह है कि छात्रों में हिंदी भाषा का ज्ञान अधिक बढ़ेगा और हिंदी के प्रचार - प्रसार में ज्यादा मददगार होगा । आधुनिक युग की भागदौड़ की जिंदगी में मनुष्यता अदृश्य होती हुई नज़र आ रही है । 'अनायत ' नामक इ -पत्रिका की रचनाओं के द्वारा छात्रों में सकारात्मकता की भावना जाग उठे । एक बार तहेदिल से अध्यापको और छात्रो को शुभकामनाएँ ।
धन्यवाद

संपादकीय

आज सारे संसार में मानवीय मूल्यों का पतन होता जा रहा है ।मानवीय मूल्यों को बचाने की क्षमता साहित्य में होती है । साहित्य अपनी रचनात्मक शक्ति से समाज में चेतना का भाव जगा देता है । यही चेतना मानवीय मूल्यों को बचाए रखती हैं।

प्रस्तुत हिंदी पत्रिका ' अनायत ' में क्राइस्ट कॉलेज के छात्रों ने हिंदी भाषा का ज्ञान ही नहीं जीवनोपयोगी मानवीय मूल्यों को रचना रूपी मोतियों में पिरोकर आपके सम्मुख रखने का प्रयास किया गया है|

आभार

प्रोफ.षीबा वर्गीस यु

ई पत्रिका की दीपशिखा को फिर से प्रज्वलित करने में हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रोफेसर षीबा वर्गिस जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । आपने अपने नेतृत्व में बड़ी ही शिद्दत से ई -पत्रिका का संपादन किया ।

हमारे अन्दर रचनाकार का भाव जगानेवाले डॉ शिवकुमार जी ने इस ई-पत्रिका में अच्छा योगदान दिया ।

डॉ. शिवकुमार

हमारे शुभचिंतक

प्रोफ. के के चाको

डॉ. के. एम. जयकृष्णन

डॉ. त्रेसियाम जोसेफ

ई-पत्रिका के सदस्य

EDITOR

DIYANA N
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

SUB-EDITOR

LAKSHMIPRIYA S MENON
2ND DC GEOLOGY

MAGAZINE COMMITTEE MEMBERS

ATHMAJA M
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

ANGHITHA K P
2ND DC CHEMISTRY

SRUTHI LAKSHMI M O
2ND DC PHYSICS

KRISHNACHANDRAN M
3RD DC FUNCTIONAL ENGLISH

ABHIRAM K S
2ND DC PHYSICS

V VINEETHA
2ND DC CHEMISTRY

SIVANANDANA
1ST DC CHEMISTRY

PARVATHY N N
2ND DC ECONOMICS

ATHIRA SREENI
1ST DC BCOM

BHAVAN K S
1ST DC FOOD TECHNOLOGY

NANDANA JINESH
1ST DC BCA

NEERAJ K G
1ST DC ECONOMICS

रचनाएँ

ATHIRA M S
2ND DC GEOLOGY

आवाज़

यह कैसी आवाज़ है ..... ?नीलू आश्चर्य से चारों ओर देखने लगी ।अरे यह आवाज तो मेरे पेट से आ रही हैं ।नीलू ने अपने पेट पर हाथ रखकर ध्यान से सुनने की कोशिश की तभी उसको याद आया कि उसने अभी तक कुछ खाया नहीं था ।समय दोपहर के तीन बज गए हैं ।सुबह छ बजे से निकला था । उसने , ना ही कुछ खाया है ना पिया । कैसे खाती , उसके लिए समय कहां है ,खाने पीने के लिए रुक जाती तो बच्चों के लिए कुछ नही बचता । सड़क के किनारे से वह धीरे-धीरे घर की और चली । वह अपने आप को हवा में उड़ता हुआ सा महसूस कर रही थी , लग रहा था कि वह सड़क पर नहीं बल्कि आसमान में चल रही थी । अपने एक एक कदम आगे की और नहीं बल्कि पीछे की ओर रख रही थी ।उसके माथे से पसीना आ रहा था ।उसे सब कुछ अपने सामने से अप्रत्यक्ष होता हुआ प्रतीत हुआ ।उसके सामने सिर्फ और सिर्फ अंधेरे हैं ..जो रोशनी को अपने काले मुंह से निगलता जा रहा था ।अंधेरे में उसे कुछ दिखाई नहीं दिया लेकिन वह सुन रही थी। आवाज तो अनजाना थी । " कौन है ....? "क्या हुआ इसको " "अस्पताल ले जाना पड़ेगा इसको " ।थोड़ी देर के बाद अंधेरे ने आवाज को निगल लिया । "अरे यह अंधेरा कभी खत्म नहीं होगा क्या ? ...मुझे तो घर जाना था , मैंने अभी तक कुछ खाया पिया भी नहीं . । वह जोर से चिल्लायी , लेकिन वह अपनी ही आवाज सुन नहीं पा रही थी । अरे मैं यह कहाँ फँस गई ... बाप रे घर नहीं गयी तो मेरे बच्चे भूखे मर जाएंगे ,कोई मुझे यहां से बचा लो ...भगवान के नाम पर, कसम से मैं आपकी आभारी रहूंगी , मुझे बचा लो.... " अंधेरे में वह भागी । कितनी दूर तक भागी यह नहीं पता ,वह भागती रही ,कोई तो आएगा कुछ तो मिलेगा कोई दरवाजा तो जरूर होगा ।उसे थकान महसूस नहीं हो रही थी ।

" आश्चर्य की बात है कुछ खाए पिए बिना मैं इतनी देर तक भागी, मुझ में इतनी ताकत पहले नहीं थी " । पैरों से चलकर घर पहुंचती तो दो घंटे लग जाते थे , तब लगता था कि पैरों में वजन दोगुना हो गया है , अब लग रहा है कि सिर के नीचे शरीर नहीं है ,हवा से भी हल्का महसूस हो रहा है । बच्चों को भूख लग रही होगी । "मैं जाकर कब खाना बनाऊं ... क्या बनाऊं ..कुछ हो तो बना सकूँगी !अरे मेरे हाथ में थोड़ा अनाज था वह कहां गिर गया हे ..भगवान यहां तो इतना अंधेरा है कि मैं अपने आपको भी नहीं देख पा रही हूं ..मैं कैसे ढूढूँ ? पूरा दिन सिर्फ उस दाने के लिए मेहनत की थी ताकि मेरे बच्चे भूखे न सोए ...अब मै क्या करूं ...! "नीलू को रोना आ रहा था ,लगता था कि उसके आंसुओं को भी अंधेरे ने निगल लिया था ।न ही वह बैठ सकती थी ,ना ही वह रुक सकती थी । वह भागती रही.. बिना रुके भागती रही ।उसे नहीं पता वह क्यों भाग रही थी ।आवाज को या बच्चों को ढूंढें ,या अंधेरे से खुद को बचाने के लिए वह भाग रही थी बिना भूखे - प्यासे । अचानक उसने एक आग का गोला देखा जो उसकी और आ रहा था । उसे राहत मिली अंधेरे से बचने का उपाय मिलने की खुशी में वह आग की ओर भागी । इतनी तेज भागी कि उसको अपना पूरा शरीर गरम होता प्रतीत हुआ । जब आग का गोला उसके सामने आकर रुका तो उसे लगा कि उसे खाने वाला हैं । वह धीरे-धीरे नीलू की एक-एक अंग को खाने लगा । नीलू वह देखती रही , बिना कुछ समझे ।जब वह आग उसे पूरी तरह खा खा चुकी थी। तब उसने अपनी आंखों के सामने सड़क पर गिरा हुआ अनाज को देखा और भूखे रोते हुए उसके बच्चों को भी । आखिरी बार उसने वह आवाज फिर से सुनी | लेकिन अब उसके पेट से नहीं आ रही थी, बल्कि वह रोते हुए उसके बच्चों के पेट से थी ।

ANGHITHA K P
2ND DC CHEMISTRY

संग्राम

युद्ध एक संग्राम है।
पीसते इस में आम है।
खोते अपने धाम है ।
घाटे का यह दाम है।
उन्नती उनकी नकाम है ।
खिल्ली उड़ती सरे आम है ।

जिन्दगी प्यार का नाम है ।
खुश होते, इससे आम है ।
उन्नती का यह पेगाम है ।

NEHA S R
2ND DC BSW

मोबाइल फोन और इंटरनेट

आज संसार में बातचीत के लिए होने वाली नई - नई चिप्पों में सबसे प्रमुख है मोबाइल फोन ।आधुनिक ज़माने में एक ज़रूरी चीज बन गई है।उसका कारण यह है कि मोबाइल फोन से किसी भी व्यक्ति से संपर्क कर सकता है, चाहे वह कितनी दूरी पर हो। असल में मोबाइल फोन ने सारी दुनिया को अपने हाथ में ले लिया है ।

आज कई तरह के मोबाइल फोन उपलब्ध है। भारत में मोटोरोल नामक एक कंपनी सबसे पहले मोबाइल फोन लाया था। आज नोकिया,सैमसंग, एलजी आदि कई कंपनी के फोन प्रचलित है। पहले फोन के द्वारा बात करना ही मुश्किल था । लेकिन आज संदेश भेजने आदि के साथ फोटो लेने के लिए कैमरा तथा इंटरनेट कनेक्शन भी फोन में मौजूद है।बच्चों के लिए कई तरह के खेल , वीडियो, सिनेमा आदि इसमें है।

मोबाइल और इंटरनेट आज बहुत महत्वपूर्ण है । मोबाइल और इंटरनेट आधुनिक युवा पीढ़ी के लिए वरदान या विपत्ति है -यह गंभीर चिंता का विषय है। आधुनिक लोग को यह एक जरूरी चीज है। मोबाइल में इंटरनेट कनेक्शन भी मिलने के कारण सारे लोग सदा मोबाइल देखते - देखते समय बिता रहे हैं । आज की युवा पीढ़ी को चिंता है कि

मोबाइल फोन के बिना वे हीरो नहीं बन सकते। मोबाइल फोन के विपत्तियों के बारे में सोचते तो उस से बढ़कर खतरनाक चीज और कुछ नहीं। युवा लोग ब्लूटूथ ,वाईफाई , शेयर इट नामक सुविधाओं के द्वारा अन्य फोनों से संबंध स्थापित करते हैं और अनजाने में सर्वनाश के निमंत्रण देते हैं। मोबाइल फोन के शिकार बनने वाले छात्र पढ़ाई और जीवन मूल्यों से दूर होकर असल जिंदगी से भटक जाते है ।

मोबाइल और इंटरनेट दोनों का बहुत ही उपयोग है।इंटरनेट अनंत संभावनाओं का साधन है। इंटरनेट के माध्यम से हम कोई भी सूचना, चित्र,वीडियो दुनिया के किसी भी कोने से किसी भी कोने तक पल भर में भेज सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से हम ईमेल भेज सकते हैं और प्राप्त भी कर सकते हैं। यह संदेश भेजने का और प्राप्त करने का सबसे सरल और सस्ता साधन है । आज एक आवश्यक कार्य है ऑनलाइन कक्षा जो इंटरनेट का महत्वपूर्ण गुण है |

मोबाइल फोन के गुणों और दोषों है।इसके गुणों और दोषों को पहचान कर गुणों का स्वीकार करना चाहिए। नई पीढ़ी को विनाश से बचाने के लिए माता-पिता, अध्यापकों और पूरे समाज को सतर्क रहना चाहिए। सभी का सहयोग इसके लिए अनिवार्य है।

ASIKA B LAKSHMI
1ST DC CHEMISTRY

SREE NANDANA T B
1ST DC ZOOLOGY

हिंदी मंच अनायत

प्रेरक

झूला जितना पीछे जाता है
उतना ही आगे भी जाता है
इसलिए जिंदगी का झूला
जब भी पीछे जाता है
तब डरिए मत
क्योंकि उससे ज्यादा वह
आगे जाने वाला है।
याद रखिए मन में बहुत भर
कर जियेंगे
तो मन भरकर जी नहीं पाएँगे
इसलिए मन के अंदर जो भी
चीज़े है उसे बाहर निकालकर
फेंक दीजिए।

AYSHA SALEEM
2ND DC INTEGRATED GEOLOGY

3 इडियट्स

निर्माता : विधु विनोद चोपड़ा
निर्देशक : राजकुमार हिरानी
लेखक : राजकुमार हिरानी , अभिजीत जोशी विधु , विनोद चोपड़ा
संगीत : शांतनु मोइत्रा
कलाकार: आमिर खान , करीना कपूर , आर माधवन , शरमन जोशी , बोमन ईरानी , ओमी , मोना सिंह , परीक्षित साहनी , जावेद जाफरी आदि

राजकुमार हिरानी की विशेषताएँ यह है कि वे गंभीर बातों को मनोरंजक और हँसते - हँसते कह देते है । 3 इडियट्स फिल्म के द्वारा हिरानी जी ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली माँ-बाप का बच्चो पर कुछ बनने का दबाव और किताबी ज्ञान कि उपयोगिता पर मनोरंजक तरीके से सवाल उठाए है ।

कई माता - पिता अपने बच्चों पर इसलिए दबाव डालते है क्योंकि समाज में योग्यता मापने का डिग्री / ग्रेड्स पा सके । इसलिए कई बच्चे अपने मन - पसंद की नहीं बल्कि अपने माता - पिता की इच्छा के लिए पढ़ते है । उदाहरण इस फिल्म में माधवन का किरदार।

फरहान वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर बनना चाहता था । लेकिन इसके पैदा होते ही उसके पिता ने उसे इंजिनियर बनाने को निर्णय ले लिया । वह मर - मर कर पढ़ रहा था ।

इस फिल्म का केंद्र कथा रणछोड़दास श्यामलदास चांचड़ जिसका निक नाम रांचो है। इंजीनियरिंग कॉलेज में रांचो (आमिर खान) फरहान कुरैशी (आर माधवन) और राजू रस्तोगी (शरमन जोशी) रूम पार्टनरर्स है ।

राजू का परिवार आर्थिक रूप से कमज़ोर था । भविष्य का डर सताता रहता था । उसे पढ़ाई से ज़्यादा पूजा - पाठ और गृह शांति कि अँगूटियों पर है । वह डर - डर कर पढ़ रहा था ।

रांजो एक अलग किस्म का इन्सान था । उसका मानना है कि ज़िन्दगी में वह करे जो तुम्हारा दिल कहें । वह कामयाबी और काबिलियत का फर्क अपने दोस्तों को समझता है । उसके इसी विचारों के विरुद्ध खड़े उस कॉलेज के प्रिंसिपल वीरू सहस्रबुद्धे (बोमन ईरानी) । वे ज़िन्दगी को चूहा - दौड़ में हिस्से लेने के लिए एक फैक्टरी की तरह विद्यार्थियों को तैयार करते थे ।

पढ़ाई ख़त्म होने के बाद रांजो अचानक गायब हो जाता है । वर्षों बाद रांजो के दोस्तों को उसके बारे में जानकारी मिलती है और वे उसे तलाशने के लिए निकलते है । उन्हें उस सफर में रांजो के बारे में कई नई बातें पता चलती है ।

आमिर की फिल्म में एंट्री और रेगिंग वाला दृश्य राजू के घर की हालत ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों की तरह बेहतरीन तरीके से पेश किया गया है ।

आमिर ने अपने उम्र का किरदार अच्छी तरह निभाया । आमिर के साथ - साथ माधवन और शरमन जोशी ने भी अपने किरदार का मूल्य प्रदर्शन किया । एन और आई चतुर के रूप में ओमी ने भी बेहतरीन अभिनय पेश किया । बोमन ईरानी ने को किरदार निभाया वह देखकर हमें लगता है कि वे नए ज़माने के द्रोणाचार्य है , जो अपने छात्रों से भेद - भाव करते है । संगीतकार शांतनु मोइत्रा का संगीत भी मनोरंजक था ।

यह फिल्म दिखाती है कि असली ज्ञान सिर्फ किताबें में नहीं होता । मुझे यह फिल्म बहुत पसंद आयी । इस फिल्म में दोस्ती की मस्ती है , सामाजिक जागरूकता है। मेरे विचार में हर विद्यार्थी को यह फिल्म देखनी चाहिए । हमें सिर्फ कामयाब नहीं बल्कि काबिल बनना है ।

ABHAY S NAIR
1ST DC BCA

कपिल देव

कपिल देव रामलाल निखजी (जन्म 6 जनवरी 1959) भारत के पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी हैं। भारत के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ियों में उनकी गणना होती है | वे भारतीय क्रिकेट के कप्तान के पद पर रह चुके है | कपिल देव का जन्म चंडीगढ़ में हुआ | उनका विवाह रोमी भाटिया से सन 1980 में हुआ | उनकी बेटी अमिया देव का जन्म 16 जनवरी 1996 को हुआ | उन्होंने अपने क्रिकेट जीवन का आरंभ 1975 में हरियाणा की ओर से पंजाब के विरूद्ध घरेलु क्रिकेट से करी | वह एक आल-राउंडर थे | जोकि दाये हाथ बल्लेबाजी एवं तेज गेंदबाजी भी करते थे | उनका अन्तर्राष्ट्रीय पदार्पण पाकिस्तान के विरुद्ध फैसलाबाद में हुआ| उन्होंने एक दिवसीय क्रिकेट में 23.79 की औसत से 3783 रन तथा टेस्ट क्रिकेट में 32.04 की औसत से 5248 रन बनाये| उन्होंने अपने क्रिकेट जीवन में एक दिवसीय क्रिकेट में 225 और टेस्ट क्रिकेट में 131 मैच खेले |

1983 के विश्वकप में (जिम) के विरुद्ध उनकी 175 रन की अविस्मरणीय पारी खेली | जिसके कारण भात, वह मैच जीती | उन्होंने एक दिवसीय क्रिकेट में, और टेस्ट क्रिकेट मैं 8 शतक लगाए हैं | कपिल देव ने 1994 में अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया | 24 सितंबर 2008 को उन्होंने भारतीय प्रदोशिक सेना में भाग लिया | और उन्हें लेफ्टिनेंट कर्नल के रूप में चुना गया | (1979-80)- अर्जुन पुरस्कार, पद्मश्री -(1982), (1983)- विसडेन क्रिकेट आफ द ईयर, (1999)- पद्मभूषण, (2002)- आदि पुरस्कारों से नवाज़ा गया हैं |

ALVIN SHIBU
2ND DC PHYSICS

VISHAL SIVAN
1ST DC ECONOMICS

छाती में थमें आँसू

आज बाबूराव ने पूर्वी क्षितिज की ओर देखा और जाग उठे । आज उठने में बहुत देर हो चुकी थी हर दिन पाँच बजे उठते थे। याद नहीं कि वे कल कब सो गये थे । आज उन्हें अपने घर से विदाई देनी है। जहाँ वे पिछले सत्तर साल से रहते हुए आ रहे थे। शिक्षा, रोज़गार
और विवाह सब यही सम्पन्न हुआ आज वे इस घर से जा रहे जहाँ उन्होंने अपने दोनों बच्चों की देखभाल की और उनकी पत्नी
की मृत्यु को आठ साल हो चुके थे।
पत्नी हमेशा उन से कहती थी कि "मेरे इस दुनिया से जाने के बाद आपकी आपकी देखभाल
करने वाला कौन होगा " उस समय उन्हें वह बात मजाक लग रहा था । लेकिन यह आज
सच हो गया । बच्चों की शादी को दो साल हो चुके हैं। अपनी संपत्ति का बँटवारा बच्चों की खुशी के लिए किया गया। ताकि वे उन्हें वृद्धावस्था में देखभाल कर सके। पर ऐसा नहीं हो सका जब उनका बुढापा बढ़ता गया। बेटों को वें भार लगने लगे । बेटों ने सुझाया कि वृद्धाश्रम में आज कल बहुत सुविधाएँ है। वे उन्हें वृद्धाश्रम भेजने का फैसला कर चुके थे और उन्होने अपने पिता को आज 10.00 बजे तैयार रहने को कहा । अपने पिता से इसपर जवाब मांगा तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। जिसने अपना सब खो दिया उस पिता के आँसू छाती में थमे रह गये तो किसके । क्योंकि आँसू बहाय तो किसके सामने । वे अन्दर ही अन्दर घुट रहे थे ......

EIRENE DINESH
1ST DC ECONOMICS

संघर्ष

जीवन एक संघर्ष
हर राह लगेगी कर्कष
चलकर इस पर न होता है हर्ष
दिख जाते हैं अपने अनुभव से
ऐसे दृश्य
सिंह के झुंडो से घिरा है मृश
जारी रखता है वह अपना संघर्ष
सिंहदल को उछल कर पार कर
जाता है सहर्ष
इसे कहते है संघर्ष
हर राह लगेगी कर्कष
बस निरंतर करते रहना का नाम है संघर्ष ।

MEGHNA MARIYA K B
2ND DC PHYSICS

डायरी

3 जून 2021
बुधवार

आज मुझे कहते हुए कुछ नहीं बन रहा । कोविड प्रतिबंध के एक साल बाद मैं अपने दादा - दादी से मिलने गये । दादा - दादी ने हमसे बहुत प्यार किया । रात को सोते समय मैंने कुछ आवाज़ सुनी उठकर देखा कि दादा - दादी मेरे पिता के सामने रो रहे थे । दादी कुछ कागज़ातों के बारे में बात रही थी । जिसे लेकर वह फूट - फूट कर रो पड़ी । मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। रात को सोते समय इसी के बारे में सोचती रही । सुबह उठी और सीधे मैंने अपने पिता से बात की। पिताजी ने मुझे बताया कि हमारी ज़मीन के सारे कागज़ात किसी ने चोरी कर ली है । इस बात को लेकर सारा परिवार परेशान है । दादा को यह लग रहा था कि किसी ने इन कागज़ातों को ऋण लेने के लिए कहीं गिरवी रख दी हो । क्योंकि आज कल ऐसे मामले ज़्यादा देखे और सुने जा रहे । सुनकर मुझे भी बहुत दुख हुआ । चोर चाहता तो रुपए अलमारी से ले जा सकता था । लेकिन उसने केवल ज़मीन के ही कागज़ात क्यों चुराये ? यह प्रश्न मेरे मन में कील की भाँति ठुक गया । क्या पैसे के लिए इन्सान ऐसा भी कर सकता है । शक किस पर करें ? कुछ समझ में नहीं आता। आगे भगवान ही राह दिखाए ।

SIVANANDANA
1ST DC CHEMISTRY

खूनी हस्ताक्षर

गोपालप्रसाद व्यास

ATHMAJA M
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

हिंदी मंच अनायत

सफ़र

सफर करना, यानि यात्रा करना मानव जीवन में खुशी प्राप्त करने का एक आसान मार्ग है। संसार के कोने - कोने में यात्रा करते हुए हमें जिंदगी का सच्चा अर्थ मिलता है। सफर करने का कोई सही तरीका नहीं होता। कुछ यात्रा में साहसिक कार्यों को करना पसंद करते हैं, और कुछ लोग अकेले किसी जगह जाकर चैन पाना चाहते हैं। कुछ लोग अपने दोस्तों के साथ वक्त बिताने के लिए यात्रा करते हैं और कुछ लोग अपनी व्यस्त ज़िदगी के तनाव को दूर करने के लिए यात्रा का मार्ग स्वीकार कर लेते हैं । यात्रा के कारण कुछ भी हो, इस बात में कोई तर्क नहीं कि यात्रा हमारे को आनंदित करते हैं। यात्रा हमें नयी-नयी परिस्थितियों में डाल देती हैं, नए लोगों से मिलाती हैं, और जिंदगी को एक अलग मोड़ पर पहुँचाती हैं। सफर करने से हम अपने सुखद वातातरण के बाहर आते हैं, जिससे हमें जीवन भर के लिए सीख मिलती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यहीं हैं, कि यात्रा करने से हम अपने जान पाते हैं। इसलिए यात्रा न करने के कोई बहाना नहीं ढूँढना चाहिए। उम्र बस एक संख्या ही है। चाहे आप बहुत छोटे हो या बड़े , अपने हिसाब से यात्रा करना बहुत ज़रूरी है। दुनिया एक किताब है, और जो यात्रा नहीं करते हैं, वे केवल एक पन्ना पढ़ते हैं। इसलिए, कहीं जाना चाहते हैं तो आज चले जाइए क्योंकि किसी ने सच ही कहा है, क्या पता कल हो न हो ?

INDUJA S
3RD DC GEOLOGY

मुस्कान महक की

वल्लरी पर सुमन
सुन्दर है, तेरा मन
फुँवारा छोडे घन
लहलहाता है तेरा तन
पत्तों से सजा है सघन
महक से तेरी हो जाते सन
सबकी साथी तू बन
मासूम मुस्कान की है धन
आकर्षित होते तेरी और जन
वल्लरी की सुमन

GAYATHRI C R
1ST DC GEOLOGY

साहित्य और समाज

साहित्य और समाज का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है ।एक दूसरे के पूरक है। साहित्य के बिना समाज और समाज के बिना साहित्य निर्जीव है। किसी भी देश के समाज को दर्शने का काम वहाँ के साहित्य ज़्यादा मददगार साबित होते है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण भी कहते हैं। किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति , आचार एवं विचार, उन्नति एवं अवनति का सच्चा ज्ञान उस देश के इतिहास को पढ़ने से उतना नहीं होता जितना उसके साहित्य के अध्ययन से ,उदाहरण के लिए हम रूसी साहित्य के अध्ययन से, समस्त रूसी समाज को समझ सकते हैं।

पंडित रामचंद्र शुक्लजी का कहना है कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चितृवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है। इसके साथ उन्होंने यह भी माना है कि जनता की चित्रवृति के परिवर्तन के साथ साथ साहित्य के स्वरुप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। इस कथन की पुष्टि में हम हिंदी साहित्य का अध्ययन कर सकते हैं। वीरगाथकाल का साहित्य राजपुत राजाओं की आपसी फूट, विदेशी अक्रमण एवं राजनीतिक अव्यवस्था का चित्र उपस्थित करता है। मुसलमानी अधिपत्य की स्थापना से हिन्दू समाज को बड़ा धक्का लगा और हिन्दू जाति में निराश एवं दरबारी विलासिता का परिचायक है। अंग्रेज़ी राज्य के शोषण और अत्याचार तो अनेक उपन्यासों और काव्यों का विषय बन चुके थे। भारतीय ग्रामीण जीवन की दुर्दशा मुंशी प्रेमचन्द के रचनाओं में चित्रित है। उनके गोदान में भारतीय किसान की गरीबी का वास्तविक चित्र मिलता है।

संसार में जितनी भी महान कृतियां हुई हैं। उनके मूल में साहित्यकारों और दार्शनिकों की प्रेरण प्रत्यक्ष रूप में देखी जा सकती है। फांस क्रांति वोल्टेयर एवं रूसों के पुनरुत्थान का बीज साहित्य के लेखों ने ही बोया था। अतः निश्चित रूप से ही साहित्य का किसी भी समाज एवं उसकी सत्यता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

महान साहित्यकार समाज से प्रभावित भी होता है और समय आने पर उसे प्रभावित भी करता है। महान साहित्यकार समाज को अपनी इच्छा के अनुसार मोड़ने की शक्ति रखते हैं। कबीरदास ने यदि हिंदु मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया तो तुलसी दास एवं सूर दास जनता को भक्ति के मार्ग पर ले जा सके। आधुनिककाल में बंकिमचंद्र के साहित्य से ही विप्लव आन्दोलन अनुप्राणित हुआ था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि साहित्य का प्रभाव कितना शक्तिशाली होता है। वह एक और समाज को प्रतिबिंबित करता है तो दूसरी ओर वह समाज को उन्नति के शिखरों पर भी पहुंचा सकता है। समाज की परिस्थितियां महान कलाकारों को जन्म देती है जो उनका चित्रण अपनी रचनाओं में करते हैं। सारांश यह है कि साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक है।

ANAGHA ARUN
1ST DC ZOOLOGY

मौका

विश्व के अमीर व्यक्तियों में से एक - बिल गेट्स का नाम तो सभी ने सुना होगा। एक बार की बात है, एक पत्रकार बिल गेट्स का साक्षात्कार ले रहे थे। उन्होंने उनसे पूछा, " आपकी सफलता का राज़ क्या है "? । यह सुनकर बिल गेट्स हँसे और उन्होंने अपनी जेब से चैक बुक निकाली और उसमें से एक चैक फाड़कर पत्रकार से पूछा – " आपको कितना पैसा चाहिए? जितना चाहिए इस चैक में लिख दो। पत्रकार हँसे क्योंकि उन्हें लगा कि बिल गेट्स को उनका सवाल समझ में नहीं आया। उन्होंने दोबारा वहीं सवाल पूछा। तब बिल गेट्स ने जवाब दिया, " आपको कितना पैसा चाहिए? जितना चाहिए इस चैक में लिख दो। मैं अभी इस चैक पर अपना हस्ताक्षर करने जा रहा हूँ "। पत्रकार ने हँसकर कहा, " सर मुझे आपके पैसे नहीं चाहिए मुझे आपका जवाब चाहिए " । बिल गेट्स ने जवाब दिया " मौका "। उन्होंने कहा, " जब मैंने आपके सामने चैक रखकर पूछा कि आपको कितने पैसे चाहिए, तब आपके पास अमीर बनने का अच्छा मौका था। परंतु आपने उस मौके का फायदा नहीं उठाया। ठीक इसी प्रकार जो मौका मेरे पास आता है, मैं उसे कभी नहीं छोड़ता "। पत्रकार को उनके सवाल का जवाब मिल गया।

JASMINE JIBY
1ST DC GEOLOGY

SWAPNA SUDHA
3RD DC ZOOLOGY

दहेज

दहेज का अर्थ है कोई भी संपति या मूल्यवान सुरक्षा जो दुल्हन दूल्हे को दी जाती है या देने के लिए सहमन होती है। दुर्भाग्य से दहेज भारत में एक मौजुदा व्यवस्था है। आज भी दहेज के नाम पर दुल्हन और उसके परिवार का शोषण हो रहा हैं । प्रगतिशाली के इस युग मे ऐसे लोग है जो दहेज लेने और देने को तैयार है। अभी भी सवाल का विषय है कि दहेज के नाम पर लोग अपनी बेटियों को बेचने के लिए तैयार हो जाते हैं। महिलाएँ ऐसी सामग्री नहीं हैं जिनका विचार आदान - प्रदान किया जाना है। यह सत्य है कि दहेज प्राचीन भारतीय संस्कृति का हिस्सा हुआ करता था। लेकिन जब अब इस पर विचार किया जाना है तो इसे जल्द से जल्द समाप्त कर दिया जाना चाहिए ।

भारत सरकार ने दहेज को देने वालों को रोकने और दंडित करने के लिए नियम और कानून पेश किए हैं। दहेज निषेध अधिनियम भारतीय कानून मई 1961 में लागू किया गया, जिसका उद्देश्य दहेज देना या लेना एक अपराध है। 2020 में भारत में उत्तर प्रदेश में दहेज से होने वाली मौतो की संख्या सबसे अधिक थी, जिसमें दो हज़ार से अधिक मामले अधिकारियों के पास दर्ज किये गए थे। केरल में पिछले तीन साल में 34 दहेज हत्याए हुई हैं । अभी हाल ही मे बाईस वर्षीय विस्मया ने खुदखुशी कर ली ।लेकिन उसके पति किरण कुमार द्वारा उसे लगातार दहेज प्रताड़ना और मानसिक प्रताडना ने उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित किया ।

दहेज की बुराई को समाज से जड समेत ख़त्म करने के लिए हम इसके खिलाफ मजबूत जनमत बनाना होगा। स्कूल-कॉलेजों से लड़के - लड़कियों को यह संकल्प लेना चाहिए कि वे ना तो दहेज माँगने और नहीं देगे। महिलाओं को व्यवस्था के खिलाफ अपनी लड़ाई में सामाजिक और राजनीतिक समर्थन की आवश्यकता है। उन्हें सशक्त बनाना होता ताकि वे दहेज को नकार कर अपने जीवन के बारे में निर्णय ले सके ।

MILAN PRASAD
1ST DC PHYSICS

हिंदी मंच अनायत

इंतज़ार की गहराई

इंतज़ार की गहराई
हमारी उम्मीदे फिर से जाग्रत हो आयी।
प्यार की मीठी स्मृतियाँ फिर लौट आयी ।
अचानक तुम मेरे सामने आई ।
मेरे दिल की धड़कने बढ़ाई ।
बीच में हमारे थी , खाई ।
मौन बनकर वह छायी ।
उस में भी थी जुदाई ।
हमे और करीब ले आई।
अदृश्य हो गई थी प्यार की परछाई ।
आज मेरे सम्मुख आयी ।
इंतज़ार की यह गहराई ।
आज ही हमें समझ में आई।

ANTONY P D
1ST DC FUNCTIONAL ENGLISH

हम भी कम नहीं

एक बार की बात है | चार छात्रों की परीक्षा निकट आनेवाली थी |चारों छात्र ने अपना समय घूमने में बर्बाद कर दिया | जब परीक्षा का समय आया तब वे बहुत डर गए थे | उन छात्रों ने परीक्षा से बचने का एक उपाय खोजा । उन्होंने अपनी शर्ट पर बहुत सारा ग्रीस लगा लिया और टीचर के सामने आये | उन्होंने टीचर से कहा कि हम एक मरीज़ के लेकर शहर गये हुऐ थे वापस लौटते समय हमारी कार का टायर पंचर हो गया था | उसे ठीक करते करते हमारी हालत खराब हो गयी | इस हालत में हम परीक्षा लिख नही सकते हैं | टीचर ने उनकी बात मान ली क्योंकि उन्होंने अच्छा काम किया था । इसलिए उनकी परीक्षा दो दिन बाद होगी | उन्हें बताया कि उनके लिए एक विशेष प्रकार का प्रश्न पत्र तैयार किया जाएगा | केवल पाँच प्रश्न होंगे और हर एक प्रश्न बीस अंक के होंगे | वे छात्र बहुत खुश हुए और दो दिनों के बाद उन छात्रों को परीक्षा देने के लिए अलग अलग कमरे में बिठा दिया गया | फिर सभी को प्रश्न पत्र दिया गया | वे छात्र इन प्रश्न को देखकर ही बेहोश हो गये | वे प्रश्न इस प्रकार से है |

1) तुम्हारा नाम क्या है?
2) जिस मरीज़ को अस्पताल लेकर गये थे, उसका नाम क्या था?
3) मरीज़ को कौन सी बीमारी थी?
4) मरीज़ का इलाज किस डॉक्टर ने किया था?
5) कार का कौनसा टायर पंचर हो गया था?

JITHIN C F
2ND DC INTEGRATED GEOLOGY

उसैन बोल्ट

उसैन सेंट लियो बोल्ट,एक सेवानिवृत्त जमैका स्प्रिंटर है, जिसे व्यापक रूप से अब तक का सबसे बड़ा धावक माना जाता है। वह 100 मीटर, 200 मीटर और 4 × 100 मीटर रिले में विश्व रिकॉर्ड धारक है। आठ बार के ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता, बोल्ट लगातार तीन ओलंपिक (2008, 2012 और 2016) में ओलंपिक 100 मीटर और 200 मीटर खिताब जीतने वाले एकमात्र धावक हैं। उन्होंने दो 4×100 रिले स्वर्ण पदक भी जीते। उन्होंने 2008 के बीजिंग ओलंपिक में विश्व रिकॉर्ड समय में अपनी डबल स्प्रिंट जीत के लिए दुनिया भर में ख्याति प्राप्त की, जिसने उन्हें पूरी तरह से स्वचालित समय अनिवार्य होने के बाद से दोनों रिकॉर्ड रखने वाले पहले व्यक्ति बना दिया।

एक धावक के रूप में उनकी उपलब्धियों ने उन्हें "लाइटनिंग बोल्ट" का मीडिया उपनाम दिया, और उनके पुरस्कारों में IAAF वर्ल्ड एथलीट ऑफ द ईयर, ट्रैक एंड फील्ड एथलीट ऑफ द ईयर, बीबीसी ओवरसीज स्पोर्ट्स पर्सनैलिटी ऑफ द ईयर (तीन बार), और लॉरियस शामिल हैं। वर्ल्ड स्पोर्ट्समैन ऑफ द ईयर (चार बार)। बोल्ट को टाइम पत्रिका के 2016 के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में शामिल किया गया था। [16] बोल्ट 2017 विश्व चैंपियनशिप के बाद सेवानिवृत्त हुए, जब वह अपनी आखिरी एकल 100 मीटर दौड़ में तीसरे स्थान पर रहे, 200 मीटर से बाहर हो गए, और 4×100 मीटर रिले फाइनल में घायल हो गए।

NANDANA JINESH
1ST DC BCA

प्रदूषण रहित भारत -: एक स्वप्न

बहुत सुना था दिल्ली शहर के सुख सुविधाओं और आधुनिकता भरी ज़िन्दगी के बारे में । ऐसे ही कुछ आकान्शाओं से मन भर के निकल पड़े थे दिल्ली, अपने परिवार के साथ। सोचा नहीं था परिणाम थोड़ा बुरा निकलेगा । उम्र करीब दस वर्ष थी जब पहली बार दिल्ली जैसे बड़े शहर पर कदम रखने का अवसर प्राप्त हुआ। सुबह का समय था, ट्रेन से निकलते ही ठंड के कारण वायु कोहरे से भरी थी । स्टेशन से गाड़ी में होटल तक जाते वक्त देखा दिल्ली की रोड़ जो गंदगी की हद पार कर चुकी थी । बाकी आधुनिकता का तो कोई सवाल नहीं उठता इसमें दिल्ली के बाद ही भारत को कोई भी शहर आ सकता है । लेकिन दिल्ली पहुँचते दूसरे दिन ही मुझे चिकन - पॉक्स हो गया जिससे उस शहर के प्रदूषण कितने हानिकारक है, सिद्ध हो गया ।

भले ही बात कुछ दस साल पुरानी है, परंतु दुख की बात यह है कि अभी भी दिल्ली की प्रदूषण कम नहीं हुई । यह बात अब दिल्ली की नही रही भारत के हर राज्य मे प्रदूषण देखने को मिल सकता है। इसमें सब से ज्यादा प्लास्टिक का कच्चरा इधर - उधर नजर आ जाएगा । जिसे जलाने से वायु प्रदूषित होती है । पानी में फेकने से पानी और मिट्टी प्रदूषित हो जाती है। खेतो में जहरीले रासायन के छिडकाव से हवा, पानी और मिट्टी भी प्रदूषित होती जा रही है । पेड और नदी जिसे भारतवासी पूजते थे । आज पैसो के स्वार्थ में अन्धे होकर दोनो का नाश कर रहे है। पेडो के कटने से मिट्टी का कटाव तो बढ ही रहा है साथ में ध्वनि और वायु भी प्रदूषित होती जा रही है। नदी जिसमे शहर का सारा कच्चरा और कारखानों से निकलने वाला जहरीले पदार्थ नदियों में मिलने से नदी प्रदूषित होती जा रही है । कुएँ और नहरों को कूडा दान बनाकर रख दिया है। "क्या भारतवासियों के किस्मत में प्रदूषण रहित देश लिखा है ? " मेरे मन में अचानक यह सवाल उभर आया जिसका जवाब शायद ही किसी के पास होगा ।

ATHIRA SREENI
1ST DC BCOM

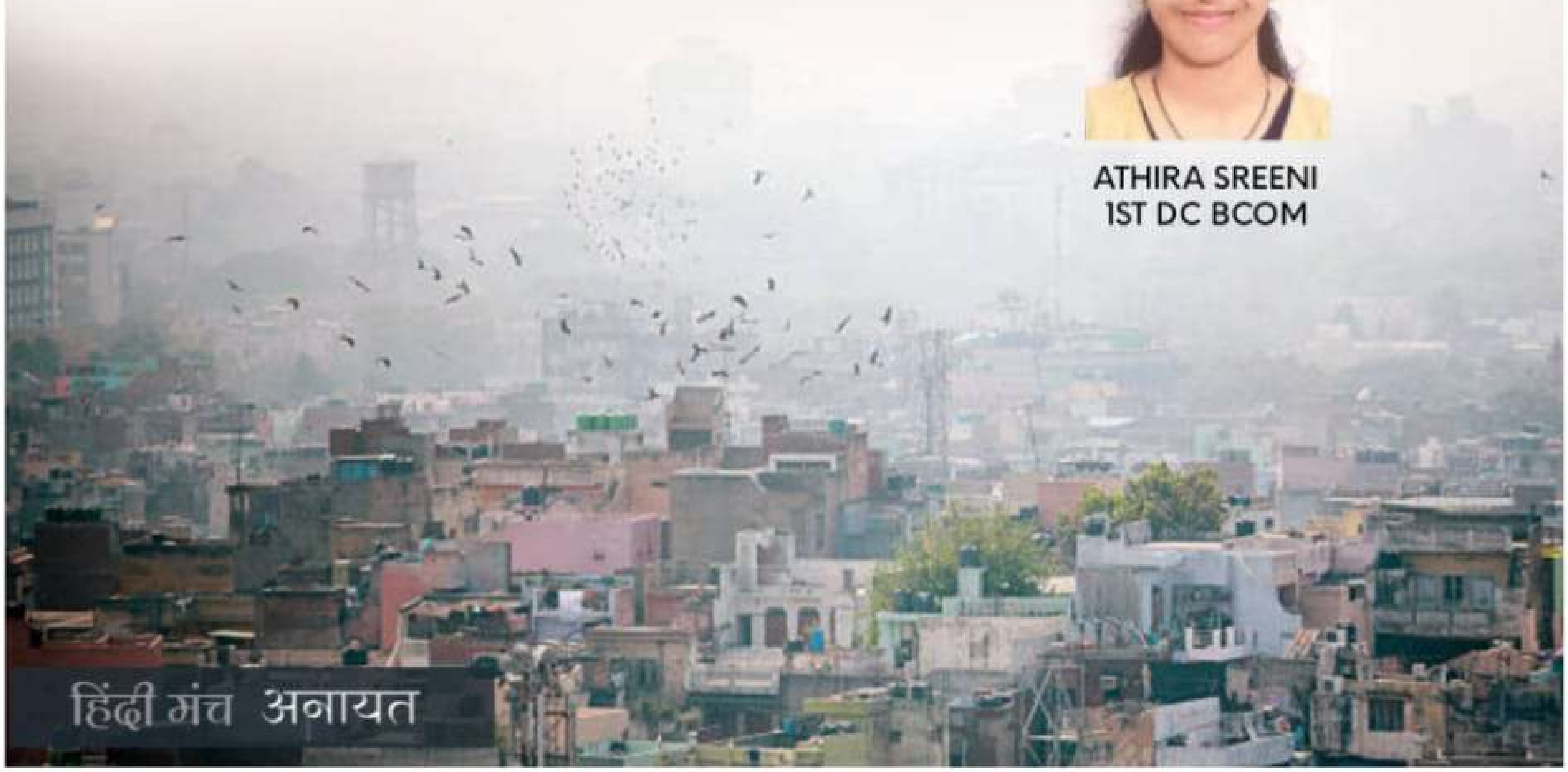

पटकथा

(यमराज के दफ्तर के कमरे का दृश्य है। उस कमरे में कई दीवार
घड़ियाँ टँगी हुई है। दोपहर का
समय, एक भारतवासी की आत्मा
कमरे के बाहर खड़ा आश्चर्य से घड़ियों को देख रहा है । इस समय यमराज आते है ।)
आदमी - प्रणाम महाराज

यमराज - प्रणाम । (अपना सिर झुकाकर बोले)

आदमी - आपने क्या घड़ियाँ बेचने की दुकान खोल रखी है ?

यमराज - मैं कोई व्यापारी नहीं हूँ ,
जो घड़ियाँ बेचूँ

आदमी - (हँसकर) तो फिर ये घड़ियाँ क्यों लटका रखी है ?

यमराज - ये घड़ियाँ भ्रष्टाचार के सूचक है।

आदमी - वह कैसे ?

यमराज - तुमने ध्यान दिया यह घड़ियाँ
अलग अलग देशों की है। जिस देश में
सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार है , उस देश की
घड़ी की सूई बहुत तेज़ घूमेगी । जिस देश में भ्रष्टाचार कम होगा उस देश की सूई कम ।

हिंदी मंच अनायत

आदमी - अच्छा अब में समझा । ये अमिरिकन घडी, रूस ,अफ्रिका, जर्मन, चीन, अफगान् , बुलगेरिया , नेपाल , श्रीलंका, म्यनमार सारे देशों का नाम लेकर । मगर महाराज आपने भारत देश की दीवार घड़ी नहीं लटकाई । कहीं आपने न लटकान की रिश्वत तो नहीं ली।

यमराज- तू बड़ा ही शय्याणा है। तेरा यह भ्रम अभी
दूर कर देता हूँ । चल आ मेरे पीछे !

आदमी - कहाँ पर आना है ?
यमराज - मेरे बेडरूम में चल के देख। पँखे के स्थान पर भारत की घड़ी धूम रही है ।

आदमी - (आश्चर्य से) हे भगवान !

ASWIN K J
1ST DC BCA

प्रेम के धागे

धागे धागे से
प्रेम के धागे में
तूने बाँधली हैं क्यूँ
मेरी नजरे तेरी ओर
कैसे चूरावूँगी
मेरी आंखे तुझसे
ऐसे डोर से है बांधा
तूने , मेरे
दिल को, नजरों को
हाँ तूने खुद से बांधा
मेरे रूह को भी
साँसे भी मेरी
बिन मांगे ही करली
तूने अपने ही नाम
ना जाने क्यों
तेरी प्रेम की धागो में
यूँ उलझी पडी हू मैं
आगे भी ना बढूँगी
ना पीछे मूड सकती
बँधी में प्रेम के धागे से
धागे धागे से प्रेम के धागे से ।

A PRAVEENA
2ND DC ENGLISH LITERATURE

हिंदी मंच अनायत

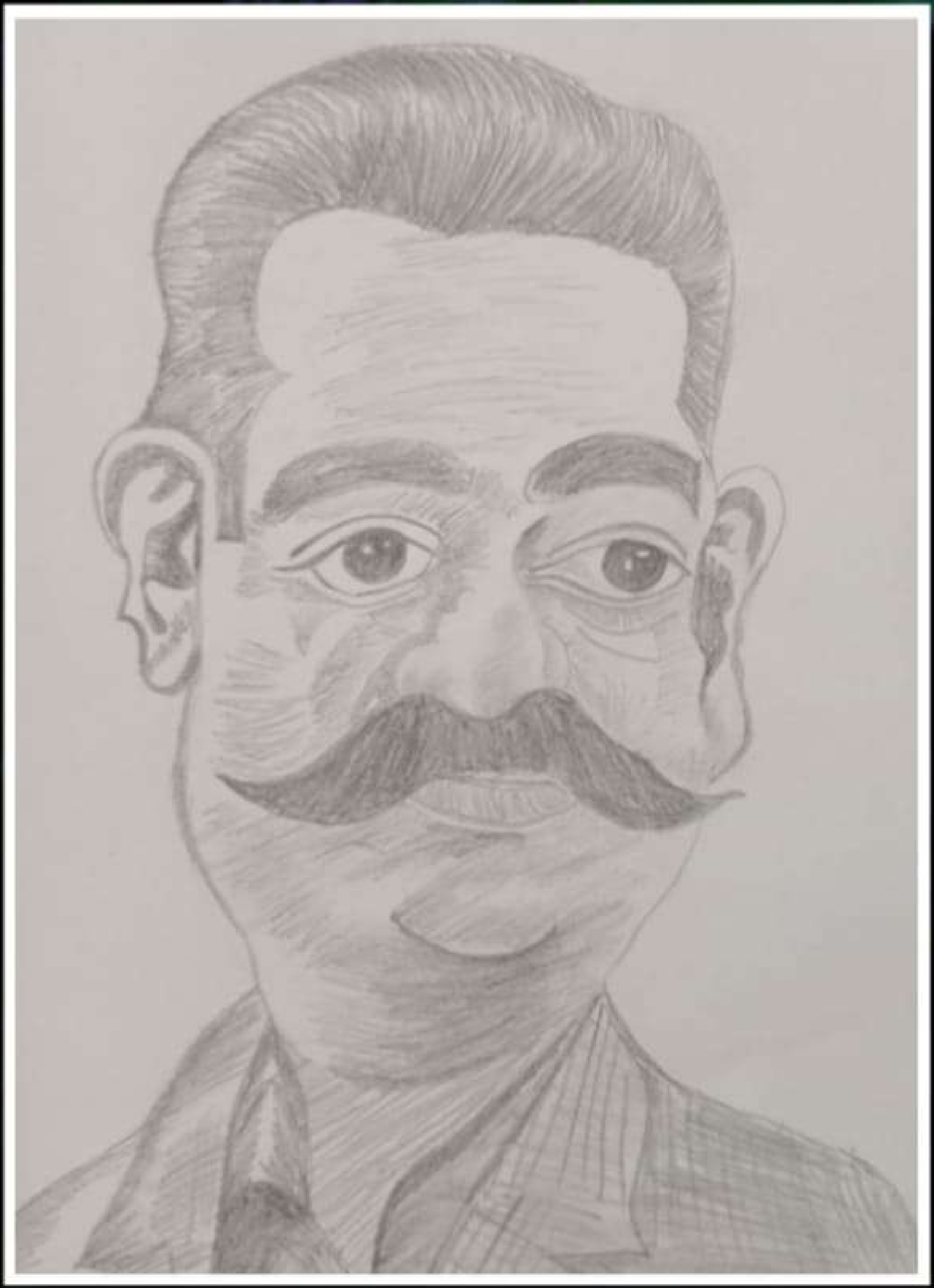

SREE NANDANA T B
1ST DC ZOOLOGY

लता मंगेशकर

अजी रूठकर अब कहाँ जाईयेगा
जहाँ जाईयेगा, हमें पाईयेगा...

यह सूरीली आवाज़ हम अब सुन नहीं पाएंगे। भारत की सबसे लोकप्रिय और आदरणीय गायिका लता मंगेशकर जी, जिनकी जादूई आवाज़ के भारतीय उपमहाद्वीप के साथ-साथ पूरी दुनिया में दीवाने हैं। स्वर- साम्राज्ञी, राष्ट्र की आवाज़, भारत कोकिला, स्वर कोकिला अन्य नामों से भी आप प्रसिद्ध है।

बचपन

आपका जन्म २८ सितंबर १९२९ को एक कर्हाडा ब्राह्मण दादा और गोमंतक मराठा दादी के परिवार में, इन्दौर वर्तमान मध्यप्रदेश में हुआ था।उनके पिता रंगमंच एलजी के कलाकार और गायक थे।वे बचपन से ही गायक बनना चाहती थीं।
बचपन में कुन्दन लाल सहगल की एक फ़िल्म चंडीदास देखकर उन्होने कहा था कि वे बड़ी होकर सहगल से शादी करेगी। पहली बार लता ने वसंत जोगलेकर द्वारा निर्देशित एक फ़िल्म कीर्ती हसाल के लिये गाया। उनके पिता नहीं चाहते थे कि लता फ़िल्मों के लिये गाये। इसलिये इस गाने को फ़िल्म से निकाल दिया गया। लेकिन उनकी प्रतिभा से वसंत जोगलेकर काफी प्रभावित हुये।

पिता की मृत्यु के बाद (जब लता सिर्फ़ तेरह साल की थीं), लता को पैसों की बहुत किल्लत झेलनी पड़ी और काफी संघर्ष करना पड़ा। उन्हें अभिनय बहुत पसंद नहीं था लेकिन पिता की असामयिक मृत्यु के कारण पैसों के लिये उन्हें कुछ हिन्दी और मराठी फिल्मों में काम करना पड़ा।

1949 में लता को ऐसा मौका फ़िल्म “महल” के “आयेगा आनेवाला” गीत से मिला। इस गीत को उस समय की सबसे खूबसूरत और चर्चित अभिनेत्री मधुबाला पर फ़िल्माया गया था। यह फ़िल्म अत्यंत सफल रही थी और लता तथा मधुबाला दोनों के लिये बहुत शुभ साबित हुई। इसके बाद लता ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

पुरस्कार

फिल्म फेयर पुरस्कार (1958, 1962, 1965, 1969, 1993 और 1994)
राष्ट्रीय पुरस्कार (1972, 1975 और 1990)
महाराष्ट्र सरकार पुरस्कार (1966 और 1967)
1969 - पद्म भूषण
1974 - दुनिया में सबसे अधिक गीत गाने का गिनीज़ बुक रिकॉर्ड
1989 - दादा साहब फाल्के पुरस्कार
1993 - फिल्म फेयर का लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार
1996 - स्क्रीन का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार
1997 - राजीव गांधी पुरस्कार
1999 - एन.टी.आर. पुरस्कार
1999 - पद्म विभूषण
1999 - ज़ी सिने का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार
2000 - आई. आई. ए. एफ. का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार
2001 - स्टारडस्ट का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार
2001 - भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न"
2001 - नूरजहाँ पुरस्कार
2001 - महाराष्ट्र भूषण

ATHMAJA M
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

डायरी

मंगलवार
14-01-2021
11:30

मेरी दीदी ने बारहवी के बाद कृषि विज्ञान में डिल्लोमा किया था। क्योंकि यह कोर्स मेरी - दीदी को बहुत पसंद था । इसलिए ममी पापा ने उनको पढ़ाया । लेकिन हमारे रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने हमारा मजाक उडाया कि बिना सोचे समझे अपनी बेटी को यह कोर्स करवाया ।अगर बच्ची को चिकित्सा, इंजीनियरिंग या नॉसिंग करवा दिया होता तो वह उसके भविष्य में काम आ जाता ।इसी बीच दीदी ने प्राईवेट कम्पनियों में नौकरी की और साथ मे कंप्यूटर का कोर्स किया। काम का बोझ और अधिकारियों के ताने सुनकर दीदी को बहुत दुख होता था। वह मुझ से कहती थी कि "मैंने अपनी पसंद से कृषि विज्ञान का कोर्स चुना। इस कोर्स को चुनकर मैने गलती तो नही कर दी "।लोगो का कहना ठीक था । अगर चिकित्स , इंजीनियरिंग या नार्सिंग की पढ़ाई कर लेती तो मेरी ऐसी हालत नहीं होती। मैं उन्हें धैर्य देती और हमेशा कहती कि दीदी "जो होता है,अच्छे के लिए ही होता है "। यह सुनकर दीदी को हौसला मिलता और अपने कार्य को कर्तव्य निष्ठा के साथ करती।

दीदी ने पी.एस.सी कोचिंग की जिसकी ऑन लाईन कक्षाएं रात को चलती थी। दीदी काम से आने के बाद देर रात तक अपनी पढ़ाई करती। दीदी ने पी .एस .सी की परीक्षा दी। इस परीक्षा में दीदी का नाम रैंक लिस्ट में आया। रैंक लिस्ट में आने के बाद रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने कहना शुरू कर दिया सूची में आये हुए लोगों की कोई पोस्टिंग नहीं होगी। दीदी का मन सुनकर और बैठ गया। क्योंकि तीन साल गुज़र चुक थे। दीदी का दु:ख बढ़ता ही जा रहा था। अंत मे सरकार ने फैसला लिया । सूची में जितने नाम थे उन्हें सभी को नौकरी मिली। मेरी दीदी को कृषि सहायक ग्रेड दो का पद मिला । वह मेरे पास आयी और मुझे बाँहो में भरकर खूब रोई। उस दिन मैं इतना खूश हुई कि मेरे पास कहने के लिए शब्द ही नहीं थे। सच में आज का दिन मैं कभी नहीं भूलूँगी ।

AKSA MARIYA VIJU
1ST DC FOOD TECHNOLOGY

आत्महत्या और ज़िन्दगी

रेलगाड़ी सीटीं बजाती हुई तेज़ी से आगे बढ़ रही हैं। चुक... चुक... चुक... आवाज़ बढ़ने पर रागिनी के दिल की धड़कन भी ज़ोर से बढ़ने लगी। अपनी जिंदगी के बहुत कड़वाहट एक एक करके उभरने लगी। " मैं कहां जा रही हूँ , क्या करूंगी मैं तो मरने जा रही हुँ " , रागिनी सोचने लगी। " ऐसी घुटन भरी जिंदगी जीने से अच्छा है कि मैं मर ही जाऊँ " । तभी अगले स्टेशन से एक माँ और उसकी छह साल की बच्ची , रागिनी की बोगी में आ गई। उस औरत का मुँह सुजा हुआ था। हाथ में और गाल में बहुत सारी चोटे थी, लग रहा था जैसे किसी ने जोर से पीटा हो। पर फिर भी उस औरत के, होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। लग रहा था , उन्होने जल्दी से हार नही मानी ।

" सुनिये तो , बहन आपके गाल पर चोट लगी हूई है। क्या हुआ आपको ? " रागिनी उस औरत से पूछने लगी। वह औरत पसोपेश में आ गई , पर फिर से अपना होसला जुटाकर कहा " बस मैं सीढ़ियों से गिर गई थी " । पर रागिनी जानती है कैसे चोट लगी होगी ? , क्योंकि उसने भी तो सहे है इस तरह की मार-पीट। अपने दिल और दिमाग में वह कडवाहट सारी ओर फैला चुकी थी, अब बस रागिनी को कहीं दूर जाकर आत्महत्या करके अपनी जीवन की आहुती देनी है।

समय बढ़ता ही गया, वह किसी के लिए नही रुकता और न ही पीछे जाता है। बस चलते रहना है , साथ-साथ । वह छह साल की बच्ची किसी मोबाइल फोन पर गेम खेल रही थी। अचानक वह जोर से चिल्लाई "याय ! मम्मा मैं जीत गयी , मैं जीत गयी ! याय ! " । पता नहीं उस औरत का मुख अचानक खिल उठा। वह बच्ची खिलाखिला कर हँसने लगी।

" वाह ! वेरी गुड बेटा...तुम तो बड़े कमाल के हो... " यह कहकर उन्होने रागिनी की ओर मुड़ कर कहा " मेरी बेटी बहुत टैलेंटेड है , वह पढ़ने में माहिर है... और मोबाइल के बारे में तो उसे सब कुछ आता है " रागिनी बस उससे हाँ में हाँ मिलाती जा रही थी | रागिनी का मन वितृष्णा से भरा हुआ था | किसी तरह अपनी जिंदगी को खत्म करना चाहती थी | रात होने वाली थी पंछी अपने घोसले की और उड रहे थे | सूरज भी ढलने वाला था | सारी और अपनी लालिमा फैला कर धरती को चूम रही थी | रागिनी ने अपने जीवन में इतना अच्छा दृश्य पहले कभी नहीं देखा था | शायद देखना चाहती ही नहीं थी , क्योंकि , अपने दुख को संभालते संभालते वह अपनी जिंदगी के हसीन और सुनहरे पल देख ही नहीं पायी | शायद देखा हो लेकिन दुख पीड़ा दर्द सब कुछ इतना उभर चुका था कि किसी की ओर उसका ध्यान ही नहीं गया | तभी वह औरत उस बच्ची से कह रही थी , " आराद्या बेटा , आप जानते है , अगर एक दिन सूरज नहीं उगा तो क्या होगा ? " उस बच्ची की आंखों में कौतूहल टिमटिमा रही थी | " नहीं मम्मा ... मुझे नहीं पता , आप बताओ न , क्या होगा , आप बहुत समझदार हो , बोलो ना मम्मा " वह बच्ची मचलकर पूछने लगी | रागिनी भी उस औरत की और ध्यान लगाने लगी | " बेटा अगर एक दिन सूरज नहीं आया तो फिर भी 8 मिनट तक हमें वही तेज रश्मि वही गर्माहट महसूस होगी जो आप पहले अनुभव करते है | जब भी आपको जिंदगी में लगे कि आप हार रहे हो , हताश हो , कुछ नहीं कर सकते तो आप मम्मा की ये बात जरूर याद रखना | ठीक है ? " उस औरत ने उस बच्ची से कहा | हालांकि वह बच्ची कुछ- कुछ समझती है | पर रागिनी को अपने दिन की कड़वाहट के अंदर मधुरता की झलक महसूस हुई उसे लगा कि उसे जीना है | सौतेले पिता ने उस के साथ शोषण और बलात्कार किया । जो भी हो मुझे अपनी माँ के लिए जीना है | जिसने मुझे संभाला पाला पौसा बड़ा किया | एकपल के लिए लगा माँ अपनी मुस्कुराहट मेरे पास छोड़ कर गई हो | एक तीक्षण गर्माहट रागिनी के अंदर उभर आई |उस अजनबी औरत ने उसे एक चीज समझाई जो उसके सामने होते हुए भी समझ में नहीं आ रही थी| पता नहीं क्यों रागिनी को उस औरत के बारे में और भी जाने का उत्साह पैदा हुआ |

रात का समय था , वह औरत अपने थैले में ये खाने की चीज निकाल रही थी | वह बच्ची फोन में गेम खेल रही थी | बीच-बीच में वह अपनी मम्मा से जीतने की खुशी बांट रही थी | वह औरत भी अपनी बच्ची की खुशी को देखकर खिलाखिला कर हंस पड़ती थी | उस औरत ने रागिनी की ओर खाने की चीज़ बढ़ा दी , रागिनी ने उस औरत के हाथ से खाने का कोर लिया । रागिनी को ऐसा लग रहा था कि वह औरत उसे अपनी कीमती जिंदगी वापस दे रही हो , जो उजडी हुई सी और काली पड़ी हुई थी , आज उस औरत ने उसकी जिंदगी पर खुशियों की सफेदी पोतकर वह कालापन मिटा दिया था |

रागिनी ने निश्चय कर लिया था उस औरत के बारे में जानकर ही रहेंगी | रात बहुत हो चुकी थी । आज पूर्णिमा की रात है और चंद्रमा का प्रकाश चारो ओर फैला हुआ था | रागिनी ने देखा कि चांद में भी काले धागे होते हैं पर फिर भी वह अपने तेज प्रकाश धरती को प्रकाशमान कर रहा था | टिमटिमाते हुए तारे एक दूसरे से बात कर रहे हैं , इतनी कम आवाज में कि कोई इंसान जाग ना पाए | " कल एक नई सुबह होगी " रागिनी अपनी मां की याद में डूबकर अपने आप से वादा कर रही है | पता नहीं रागिनी की आंख कैसे बंद हो गई , जैसे उससे लग रहा हो कि वह अपनी मां की गोद में लेट कर उनकी लोरी की मधुरता में सो गई हो | कहते हैं न माँ की दुआ वक्त तो क्या नसीब भी बदल सकती है |

सुबह सात बजे रागिनी की आंख खुल गई | इतने आराम से बहुत अरसे सोयी थी , सब कुछ इस औरत की एक छोटी सी बात का असर है। , उससे मुझे तहे दिल से शुक्रिया कहना चाहिए | यदी बात कहने के लिए वह अपनी आँखे खोलती है तो उसकी आंखें खुली की खुली रह गई | माँ और बेटी दोनों गायब , । , रागिनी खड़ी हुई । गाड़ी किसी स्टेशन पर रुकी हुई थी| उसने अपनी नजरें चारों और दौडाई , तो देखा मां बेटी जा रही है एक गली से | रागिनी ने अपना सामान उठाया और उनका पीछा किया |

वह किसी पुराने घर के अंदर जा रही थी रागिनी ने उन दोनों के पीछे उस घर में घुस गई | घर में घुसकर उसकी आंखें फटी की फटी रह गई उस घर की दीवारो पर आत्महत्या के विरुद्ध पोस्टर्स थे | "

हिंदी मंच अनायत

अपने हाथ मत काटो वह कागज नहीं है । हाथों को ताकत दो ताकि जिल्लत का जीवन न जी सको " – रागिनी लिखे हुए शब्द को पढ़ते हुए जा रही थी | तभी वह एक लड़की से टकराई | तो रागिनी ने उससे पूछा " वह औरत और वह बच्ची ... " तो वह लड़की ने मुस्कुरा कर कहा " वह मैडम रश्मि देसाई है वे खुदखुशी करने वालों को रोक कर आत्म विश्वास भरने का काम करती है । इसके के लिए यह एनजियो चलाती है, देखिए यहां पर बहुत सारे बच्चे , युवा , बूढ़े सब है उस लड़की ने रागिनी को दिखाया | उस लड़की ने कहा मैडम खुद अपने पति के मारपीट के बाद भी एनजीओ चलाती है आज ही उन्होंने उससे जेल भिजवाया है | वह खुद आत्महत्या करना चाहती थी पर अपनी बेटी के लिए उन्होंने जीने का प्रयत्न किया| रागिनी को आश्चर्यचकित हुआ |

" वह बेहद पत्थर जिंदगी जी रही थी | आज उन्होंने कर दिखाया कि आत्महत्या से कुछ हल नही होता सिर्फ और सिर्फ अपनो का दुख बढ़ाते हैं | इतना कहकर वह लड़की एक कमरे में चली गई | रागिनी को एक नई राह मिल गई थी जिससे वह अपने आप को पहचान सकी |

2 साल बाद मुंबई के एक स्टेज पर यह वाक्य " अपने हाथ मत काटो वह कागज़ नहीं है " तेजी से भारत में फैलने लगी | रागिनी ने आत्महत्या के विरुद्ध आंदोलन शुरू किया जो पूरे देश में फैल रहा है |

PADMINI C MENON
3RD DC CHEMISTRY

ALINA AMEER
1ST DC CHEMISTRY

जज का फ़ैसला

3RD DC ECONOMICS

मुसिरिस

पौराणिक संसार की पूरब दिशा का सबसे बड़ा व्यापार केंद्र था मुसिरिस। ऐतिहासिक 'स्पैस रूट'(spice route) का ह्रदय बनी मुसिरिस पेरियार नदी में हुई एक महाप्रलय से 3000 वर्षों की पहले नष्ट हुई। यह भारत को बौद्ध,अरबों,चीनी,यहूदी,रोमन,पुर्तगाली,डच और अंग्रेजों तक को जुड़ा था। इसका साबुन के रूप में चीनी सिक्के,डच सिक्के,चीनी शिलालेख,अरबी की मिट्टी बर्तनों के टुकड़े आदि यहाँ से खुदाई में मिले थी।आज के कोडुंगल्लूर नगर में मुसिरिस रहते थे। इतिहासकारों के अनुसार बी.सी में भी इसी जगह रहते थे। संघसाहित्य में और इंडो यूरोपीय कृतियों में भी मुसिरिस के बारे में उल्लेख करते थे। रामायण में बतायी गयी 'मुराचिपट्टणम' यही स्थान मानते है। तमिल के शब्द 'मुसीरी' से ही मुसिरिस नाम आया माना जाता है। मुसिरी का अर्थ है विभाजन करके बहना। मानी जाती है कि उस समय कोडुंगल्लूर से बहते पेरियार नदी दो शाखाओं बहने में कारण उसे यह नाम मिला। यह पौराणिक शहर की महत्व समझकर केंद्र और केरल सरकार एक साथ इसको संरक्षित करने केलिए एक नयी योजना लागू कर दीत,वह है मुसिरिस हेरिटेज प्रोजेक्ट। इस योजना के तहत एर्नाकुलम के नोर्त्त परवूर से कोडुंगल्लूर तक के प्रदेशों (जहाँ मुसिरिस रहा करते थे) को संरक्षित किया गया। कुछ स्मारकों की जानकारियाँ इस प्रकार से है।

जूयिष सिनगोग (Jewish synagogue)

एर्नाकुलम जिला के नोर्त्त परावूर में यह सिनगोग 1420 में बना था। मलबारी यहूदी ने पालियम परिवार द्वारा दी गई जमीन पर बनाई गयी है। जरुसलेम देवालय के आधार पर यह उपासनागृह बनाये गये है। आग में नष्ट हुए यहूदियों का उपासनागृह 1614 में पुनर्निर्माण किया । यहूदियों का विश्वास है कि कम से कम दस यहूदी पुरुष आस्तिक होने चाहिए वरना आराधना नहीं हो पायेगी। इसलिए 1960 के दशक के बाद जब केरल के यहूदी इस्रायेल जाने के बाद उनके देवालयों में आराधना रुक गई।

पालियम पालस म्यूजियम

पालियम महल कोच्चि राज्य के प्रधानमंत्री पालियत्तच्छन का पारंपरिक घर है। यहाँ कई दिनों तक राजा को छुपाए रखा था। इसी के कारण ही इसे 'कोविलकम' का महल कहते है। कोट्टप्पुरम किला पर आक्रमण करने में मदद करनेवाले पालियत्तच्छन को सम्मान के रूप में डच ने इस घर को केरलीय-डच संकरशैली में नया बनवा कर दिया। यह शैली बहुत अधिक सुंदर है।

पालियम महल की विशेषताएँ

•महल के अंदर चार स्तंभ बनाए हैं जिसके बीच में ही परिवार के सभी अनुष्ठान क्रम चलते हैं भले ही विवाह या मृत्यु कर्म हो।
•वायु संचार के लिए कोने से कोने तक व्याप्त प्रत्येक व्यवस्थाएँ की है।
•अरा (അറ) के नीचे एक गुप्त कमरा है।
•महल में एक कमरा है जिसको 'पीडा मुरी' कहते है। वह महल के एक दीवार में चुनकर बनवाया गया है जिसका दरवाज़ा भी विचित्र है। आक्रमण के समय अपने केलिए तथा अपराधियों को सज़ा देने केलिए भी इसका उपयोग किया जाता है।
•यहां एक खाट है जो औषधीय पौधे की रस में डूबते लकड़ी से बनी है। इसका उपयोग रोगियों के इलाज़ के लिए किया जाता था।

कोट्टप्पुरम फोर्ट(Kottapuram Fort)

1523 में पुर्तगाली लोगों ने कोट्टप्पुरम किला बनाया था। क्रान्कनूर फोर्ट के नाम से भी इसे जाना जाता है। इस किला को अब कोडुंगल्लूर फोर्ट भी कहते है। डच ने 1663 में इस किला पर कब्जा करके इसे उजाड़ दिया था। किले के स्थान की यह विशेषता है कि यह पेरियार नदी अरब सागर से जुड़ी हुई थी जिससे मलबार से गुजरने वाले सभी जहाजो और नौकाओं पर नियंत्रण रखा जा सकता था।

SRUTHI LAKSHMI M O
2ND DC PHYSICS

भगवा श्वेत-हरा- तिरंगा ,

जिस वतन से हूँ मैं
उस वतन की है अलग बात
प्यार हो जाएगा उसके साथ
करके देखो लो ...
मेरे वतन से एक मुलाकात

जिस वतन से हूँ मैं
यहाँ हिमालय का शीर्ष हैं ऊँचा
गांधी जैसा न है कोई दूजा
गंगा की जहाँ होती है पूजा
देखकर विदेशिया को सूझा
ऐसा वतन न कोई होगा दूजा
ऊपर वाले ने बनाया है समूचा

जिस वतन से हूँ मैं।
ग्लबान में चीन ने किया था दंगा।
भारत वासियों ने उठा लिया तिरंगा।
उनको करतूतों से उन्हे रंगा ।
उनकी क्रूरता को किया नंगा ।

जिस वतन से हूँ मैं
उस वतन की है अलग बात
प्यार हो जाएगा उसके साथ
करके देखो लो ...
मेरे वतन से एक मुलाकात

PARVATHY N N
2ND DC ECONOMICS

युद्ध से न निकलेगा समाधान!

युद्ध मानवता के खिलाफ है, जो उचित नही है। यह इस बारे में नहीं है कि कौन जीतता है या हारता है, यह लोगों के जीवन के बारे में है। युद्ध केवल दो देशों के बीच नहीं है, इसका प्रभाव वैश्वीकृत है। यह पूरी दुनिया में लाखों लोगों को प्रभावित करता है। खून बहना, बम फटना, लाशे बिछी होना, बिलकते अनाथ बच्चे, बन्दूक की गोली,   टूटेअशियाने ,बढ़ता धुआँ ये एक युद्ध क्षेत्र के दृश्य हैं। यह किसी चीज़ का समाधान कैसे हो सकता है? जैसा कि प्रसिद्ध लेखक पर्ल एस बक ने कहा है कि कोई भी युद्ध शांति नहीं लाता है, क्योंकि हिंसा केवल अधिक हिंसा लाती है। हमें शांति के लिए खड़ा होना चाहिए। भले ही दुनिया राजनीतिक और भौगोलिक जरूरतों के लिए अलग-अलग हिस्सों में बंटी हो, हम सभी एक जैसे हैं। हम एक ही हवा में सांस लेते हैं, एक ही पृथ्वी पर लेटते हैं, और एक ही आसमान के नीचे रहते हैं। कोई भी युद्ध इस धारणा पर आधारित होता है कि एक देश के लोग हैं रंग, पंथ, भूगोल या भाषा के आधार पर अक्सर पड़ोसी लोगों से अलग होता है। इस प्रकार नस्लीय श्रेष्ठता और सांस्कृतिक आधिपत्य के मिथकों को एक दूसरे से अलग करने से समाधान नहीं है। युद्ध करने से हानि ही होती है।

RIYA C R
2ND DC GEOLOGY

के.पि.ए.सी ललिता

मलयालम फिल्म उद्योग की मशहूर अभिनेत्री के पि ए सी ललिता 10 मार्च 1947 में कायमकुलम में जन्म हुआ । उनके माता पिता के .आनंदन नायर और माता भार्गवी अम्मा। वे चार भाई बहनों में सबसे बडी थी।उनके पिता एक फोटोग्राफर थे। उन्होने दस साल की उम्र से अभिनय करना शुरू किया।उनका पहला नाटक 'गीतायुटे बाली' मे अभिनय किया फिर वे केरला पीपिलस आर्ट्स क्लब में शामिल हो गई। उनका असली नाम माहेश्वरी अम्मा है । लेकिन उन्होने के पि ए सी ललिता नाम से प्रसिद्धि पाई। दूसरी अभिनेत्री से अलग पहचान बनाने केलिए उन्होने अपने नाम में के पि ए सी जोड़ दिया। उनकी पहली फिल्म के एस सेतु माधवन ने निर्देशित मे बनी ' कूटू कुदुंबाम ' थी। वे एक अच्छी अभिनेत्री ही नही दूसरो की सहायता के लिए हर दम आगे रहती थी | 1978 में फिल्म निर्देशक भरतन से उनका विवाह हुआ । उन्होंने शादी के बाद फिल्मो में अभिनय करना छोड दिया । उनके दो बच्चे हुए सिद्धार्थ और श्रीकुट्टी । कई सालो बाद वे 1983 में बनी ' काट्टाते किलिकूट ' फिल्म में नजर आई। उन्होने 550 फिल्मों मे अपने अभिनय का परचम लहराया । 'काट्टू कुतिरा ', 'सनमनासुल्लावर्क समाधानम' ,'पॉन्नमुट्टायीटून्ना ताराव' , 'मुकुंतेटा सुमित्रा विलिक्कुननु ','अमरम ', 'वटाककुनोक्की यनत्रम ','वियट्टनाम कॉलोनी',' पवित्रम ', 'स्पटीकम', 'अनियती प्राव ', आदि फिल्मों मे उनका प्रदर्शन समीक्षकों द्वारा पसंद किया गया ।

उनके पति द्वारा निर्देशित फिल्म 'अमरम ' में अपने अभिनय केलिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। 1998 में अपने पति की मृत्यु के बाद कुछ महीनों तक अभिनय से खुद को दूर कर लिया। 1999 में सत्यन अंतिक्काट द्वारा निर्देशित 'वींटूम चिला वीट्टू विशेषांकल' से वापस आई। 2000 में जयराज द्वारा निर्देशित ' शांतम ' का प्रदर्शन केलिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का दूसरा राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। उन्होने अपनी आत्मकथा नामक 'कथा तुटारुम' प्रकाशित किया । जिसको 2013 में चेरुकाट पुरस्कार मिला। 22 फरवरी 2022 में अपने चौहतर साल की उम्र में वे ईश्वर को प्यारी हो गई। उस अमर आत्मा को हमारा कोटी -कोटी नमन

SWATHI LAKSHMI M O
2ND DC PHYSICS

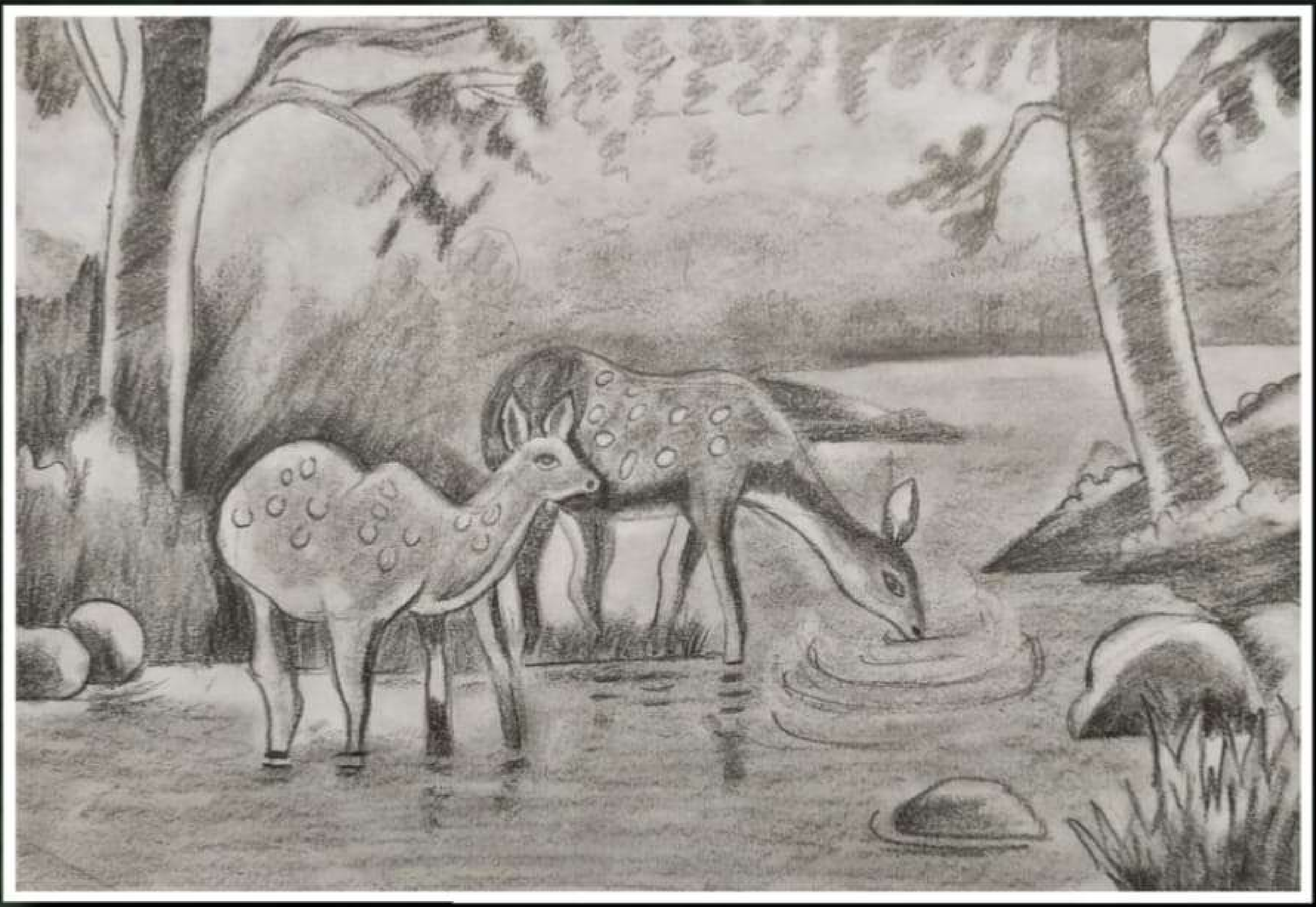

SHIFANA SHAJAHAN
1ST DC BCOM

प्यार

प्यार एक चीज़ है ।
वह उसके लिए अज़ीज है।

जाने कौन-सा यह राग है।
जिसमें सूख- दुख दुख का भाग हैं ।
यह तो एक आस है ।
उसका भी एक एहसास है ।
इसमें न जात न पात है ।
यही सबसे बड़ी बात है।

MILAN ROY
1ST DC BVOC IT

NEERAJ K G
1ST DC ECONOMICS

हिंदी मंच अनायत

मेरा बचपन

आज जब दोपहर को मैं नानी को देखने गई तो रास्ते में वही पुरानी कुल्फी वाले चाचा को देखा। गर्मी के मौसम थे इसलिए बच्चों की भीड़ उन्हे हमेशा घेरे रखती थी। यह देखते ही मुंह में पानी और आंखों में यादें भर आई । कुल्फी की मिठास तो एक बार फिर चख सकूँ। लेकिन उन यादों का क्या जो कभी वापस नहीं आ सकते । बचपन की यादें बिल्कुल उस कुल्फी की तरह हैं । जितना निगले उतनी मिठास बढती जाए। कुछ यादें कुल्फी के बादाम जैसे हैं कभी कभी वो यूँही नहीं निगले उन्हें चबाना भी पडता हैं।

बिल्कुल उस कुल्फी की तरह वक़्त गुज़रते गुज़रते यादें भी पिगलकर हमारे में समा जाती हैं। इसलिए समय रहते ही हमें बचपन का स्वाद उठाना चाहिए वर्ना कब वो पिगलकर गायब हो जाये इसका पता भी ना चलेगा । काश उस दिन मुझे वह पता होता तो शायद मैं उन भौतिक चीजों के लिए रोती और उस पल का रस जी भरकर पी लेती।जिंदगी मैं सबको एक बात का शुक्र मनाना चाहिए और वो हैं, यह पल जो हमें मिले हैं । बिल्कुल जैसे गुलजार साहिब ने कहा है आने वाले पल भी जाने वाले हैं। इसलिए जो हमारे अब हैं वो जल्दी ही यादों की तस्वीरों में बदलने वाली हैं । अगर हम चाहते हैं कि वो यादें ऐसी हो जो बार बार , हर बार सोचने पर मुस्कराहट लाए तो हमें इस क्षण को खूबसूरत बनाना होगा । आज जब दोपहर को मैं नानी को देखने गई तो रास्ते में वही पुरानी कुल्फी वाले चाचा को देखा। गर्मी के मौसम थे इसलिए बच्चों की भीड़ उन्हे हमेशा घेरे रखती थी। यह देखते ही मुंह में पानी और आंखों में यादें भर आई ।

कुल्फी की मिठास तो एक बार फिर चख सकूँ। लेकिन उन यादों का क्या जो कभी वापस नहीं आ सकते । बचपन की यादें बिल्कुल उस कुल्फी की तरह हैं । जितना निगले उतनी मिठास बढती जाए। कुछ यादें कुल्फी के बादाम जैसे हैं कभी कभी वो यूँही नहीं निगले उन्हें चबाना भी पडता हैं।

बिल्कुल उस कुल्फी की तरह वक़्त गुज़रते गुज़रते यादें भी पिगलकर हमारे में समा जाती हैं। इसलिए समय रहते ही हमें बचपन का स्वाद उठाना चाहिए वर्ना कब वो पिगलकर गायब हो जाये इसका पता भी ना चलेगा । काश उस दिन मुझे वह पता होता तो शायद मैं उन भौतिक चीजों के लिए रोती और उस पल का रस जी भरकर पी लेती।

जिंदगी मैं सबको एक बात का शुक्र मनाना चाहिए और वो हैं, यह पल जो हमें मिले हैं । बिल्कुल जैसे गुलजार साहिब ने कहा है आने वाले पल भी जाने वाले हैं। इसलिए जो हमारे अब हैं वो जल्दी ही यादों की तस्वीरों में बदलने वाली हैं । अगर हम चाहते हैं कि वो यादें ऐसी हो जो बार बार , हर बार सोचने पर मुस्कराहट लाए तो हमें इस क्षण को खूबसूरत बनाना होगा ।

A PRAVEENA
2ND DC ENGLISH LITERATURE

ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग एक ऐसा शब्द है जिससे लगभग हर कोई परिचित है। लेकिन, इसका अर्थ अभी भी हम में से अधिकांश के लिए स्पष्ट नहीं है। तो, ग्लोबल वार्मिंग पृथ्वी के वातावरण के समग्र तापमान में क्रमिक वृद्धि को संदर्भित करता है। विभिन्न गतिविधियां हो रही हैं जो धीरे-धीरे तापमान बढ़ा रही हैं। ग्लोबल वार्मिंग हमारे हिम ग्लेशियरों को तेजी से पिघला रहा हैं। यह धरती के साथ-साथ इंसानों के लिए भी बेहद हानिकारक है। ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करना काफी चुनौतीपूर्ण है; हालाँकि, यह असहनीय नहीं है। किसी भी समस्या को हल करने में पहला कदम समस्या के कारण की पहचान करना है। इसलिए, हमें पहले ग्लोबल वार्मिंग के कारणों को समझने की आवश्यकता है जो हमें इसे हल करने में आगे बढ़ने में मदद करेंगे। ग्लोबल वार्मिंग पर इस निबंध में, हम ग्लोबल वार्मिंग के कारणों और समाधानों को देखेंगे।

ग्लोबल वार्मिंग एक गंभीर समस्या बन गई है जिस पर अविभाजित ध्यान देने की आवश्यकता है। यह किसी एक कारण से नहीं बल्कि कई कारणों से हो रहा है। ये कारण प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों हैं। प्राकृतिक कारणों में गैसों की रिहाई शामिल है जो पृथ्वी से भागने में सक्षम नहीं हैं, जिससे तापमान में वृद्धि होती है।

इसके अलावा, ज्वालामुखी विस्फोट भी ग्लोबल वार्मिंग के
लिए जिम्मेदार हैं। यह कहना है कि इन विस्फोटों से कार्बन डाइऑक्साइड के टन निकलते हैं जो ग्लोबल वार्मिंग में योगदान करते हैं। इसी तरह, मीथेन भी ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार एक बड़ा मुद्दा है।

उसके बाद, ऑटोमोबाइल और जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग से कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, खनन और पशु पालन जैसी गतिविधियाँ पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक हैं। सबसे आम मुद्दों में से एक है जो तेजी से हो रही है वनों की कटाई

इसलिए, जब कार्बन डाइऑक्साइड के अवशोषण के सबसे बड़े स्रोतों में से एक ही गायब हो जाएगा, तो गैस को विनियमित करने के लिए कुछ भी नहीं रहेगा। इस प्रकार, यह ग्लोबल वार्मिंग में परिणाम देगा। ग्लोबल वार्मिंग को रोकने और धरती को फिर से बेहतर बनाने के लिए तुरंत कदम उठाए जाने चाहिए।

जैसा कि पहले कहा गया है, यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है लेकिन यह पूरी तरह से असंभव नहीं है। जब संयुक्त प्रयास किए जाते हैं तो ग्लोबल वार्मिंग को रोका जा सकता है। इसके लिए, व्यक्तियों और सरकारों, दोनों को इसे प्राप्त करने की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें ग्रीनहाउस गैस की कमी से शुरू करना चाहिए। इसके अलावा, उन्हें गैसोलीन की खपत पर नजर रखने की जरूरत है। एक हाइब्रिड कार पर स्विच करें और कार्बन डाइऑक्साइड की रिहाई को कम करें। इसके अलावा, नागरिक सार्वजनिक परिवहन या कारपूल को एक साथ चुन सकते हैं। इसके बाद, रीसाइक्लिंग को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

SREEDUTT M S
2ND DC ENGLISH LITERATURE

अपनी प्रतिभा

धैर्यवान वह बन जाएगी।
जब उसमें हिम्मत बढ़ जाएगी ।
अन्दर उसके ज्वालामुखी फट जाएगी।
सबको होश में वह लाएगी ।
समाज को वह राह दिखलाएगी।
कोई भी ताकत उसे रोक नहीं पाएगी ।
उसे जब आज़ादी दी जाएगी ।
लड़की तब अपनी प्रतिभा दिखाएगी।
वह भी खिल खिलाएगी ।
सबका प्रतिनिधित्व कर पायेगी।

FATHIMA ANSHIDA
1ST DC FOOD TECHNOLOGY

गंगा

कैलाश गौतम

V VINEETHA
2ND DC CHEMISTRY

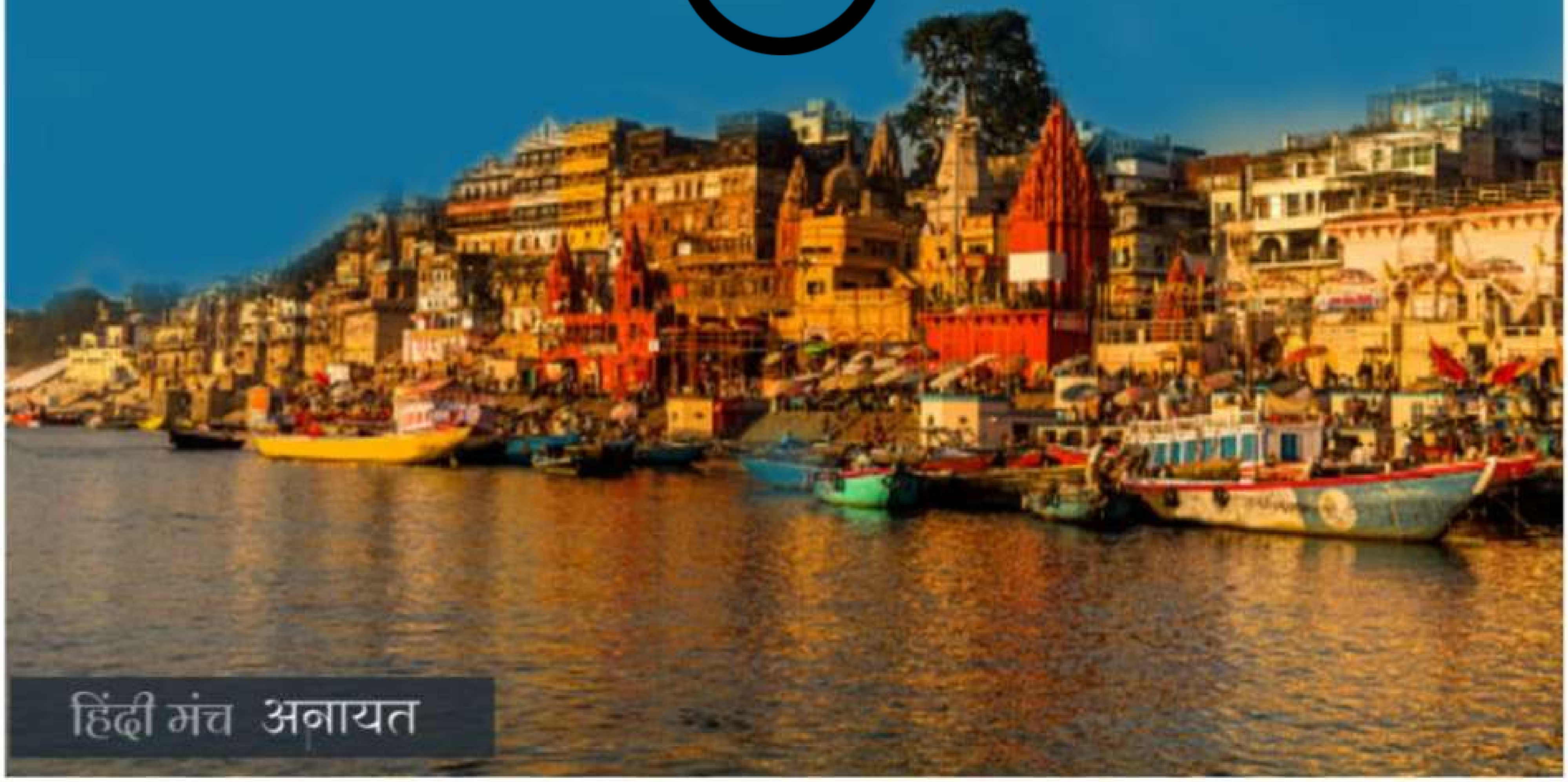

हमे सिखाती
बिना रुके हमेशा
चलते जा ओ

सब का दिल
खतरों से भरा
भूल भुलैया

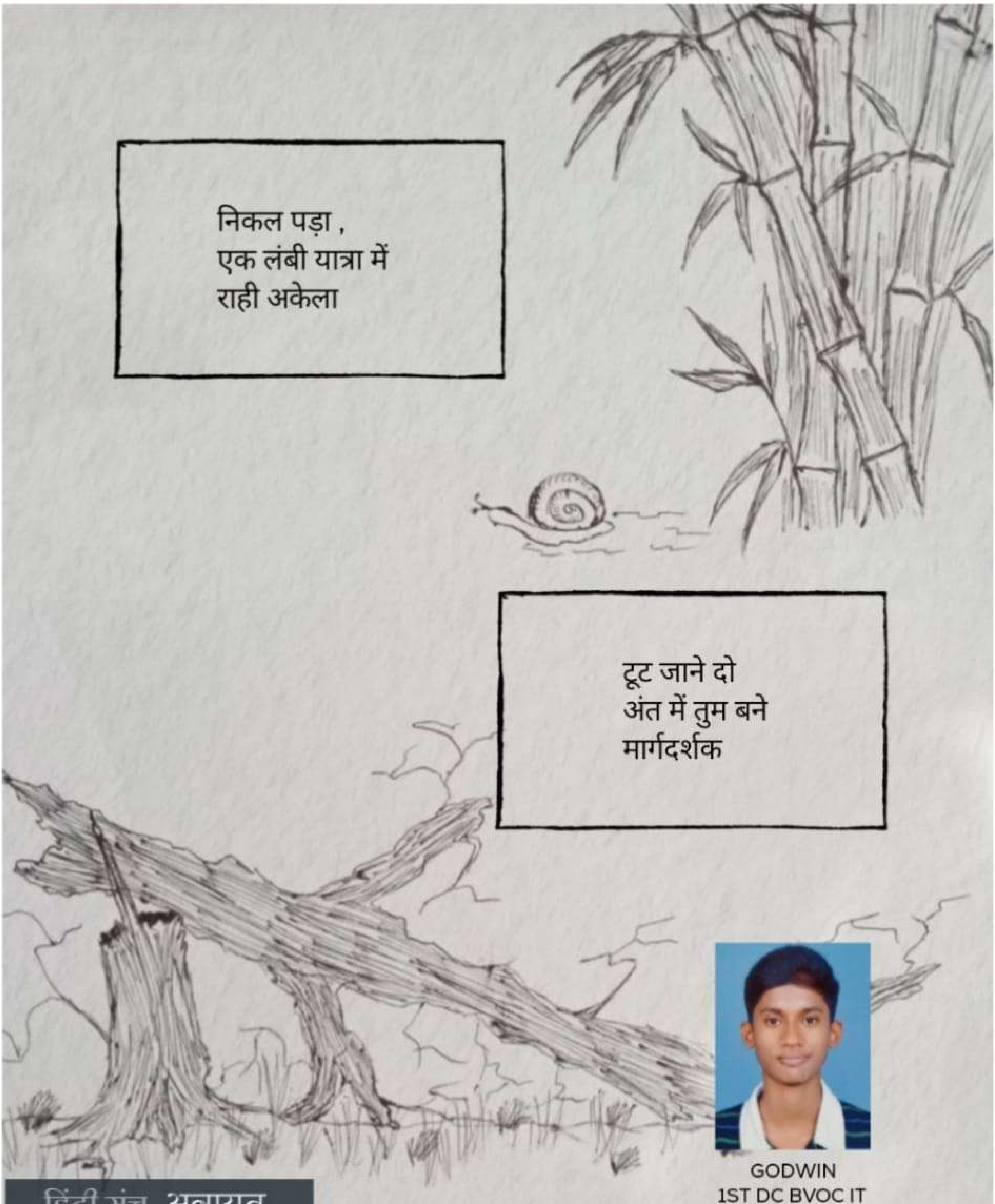

निकल पड़ा ,
एक लंबी यात्रा में
राही अकेला

टूट जाने दो
अंत में तुम बने
मार्गदर्शक

GODWIN
1ST DC BVOC IT

हिंदी मंच अनायत

सानिया मिर्ज़ा

सानिया मिर्ज़ा का जन्म 15 नवम्बर 1986 में मुंबई हुआ । यह भारत की एक टेनिस खिलाड़ी है । 2003 से 2013 में लगातर एक दशक तक उन्होंने महिला टेनिस संघ के पकल और उबल में शीर्ष भारतीय टेनिस खिलाड़ी के रूप में अपना स्थान बनाए रखने में सफल रही।

अपने करियर की शुरुआत उन्होंने 1999 में विश्व जूनियर टेनिस चैम्पियनशिप में हिस्सा किया। 2003 उनके जीवन का सबसे रोचक मोड़ बना जब भारत की तरफ से वाइल्ड कार्ड एंट्री करने के बाद सानिया मिर्ज़ा ने विम्बलडन में दौरान जीत हाजिल की |

सानिया के पिता इमरान मिर्ज़ा एक खेल संवाददाता थे | महेश भूपति के पिता और भारत के सफल टेनिस प्लेयर सीके भूपति से सानिया ने अपने शुरुआती कोचिंग की।

मात्रा 18 वर्ष की आयु में वैश्विक स्तर पर चर्चित होने वाली इस खिलाड़ी को 2006 में पद्मश्री सम्मान प्रदान किया गया । वर्तमान में सानिया मिर्ज़ा, नवगठित भारतीय राज्य तेलंगाना की ब्रांड एंबेसडर है ।

MAHESH MENON
2ND DC PHYSICS

हिंदी मंच अनायत

जयपुर

जयपुर भारत के पुराने शहरों में से एक है जिसे पिंक सिटी या गुलाबी नगरी के नाम से जाना है। आगरा और नई दिल्ली के साथ-साथ एक दर्शनीय स्थल है। जयपुर में गुलाबी रंग की इमारतें देखी जा सकती है। जयपुर राजस्थान की राजधानी है। नई दिल्ली से लगभग 6 घंटे की दूरी पर जयपुर की इमारतें और किलें हमारा स्वागत करते हैं।

जयपुर शहर में अंबर किला,नहरघर किला,हवा महल,शीश महल ,गणेश पोल और जल महल जयपुर के लोकप्रिय पर्यट्क स्थलों में से है। जयपुर शहर के स्ट्रीट शॉपिंग के लिए भी लोग वहाँ आते हैं। महलों और कीलों के अलावा जयपुर शहर मेले और त्योहारों के लिए भी काफी प्रसिद्ध है।

जयपुर के हर जगह की एक ऐतिहासिक कहानी है। जयपुर अपने किलों और महलों से विख्यात है। इसलिए दुनिया के विविध स्थानों से पर्यटक लोग यहाँ आते हैं। यह बहुत खूबसूरत जगह है।

ANRIYA GEORGE
1ST DC CHEMISTRY

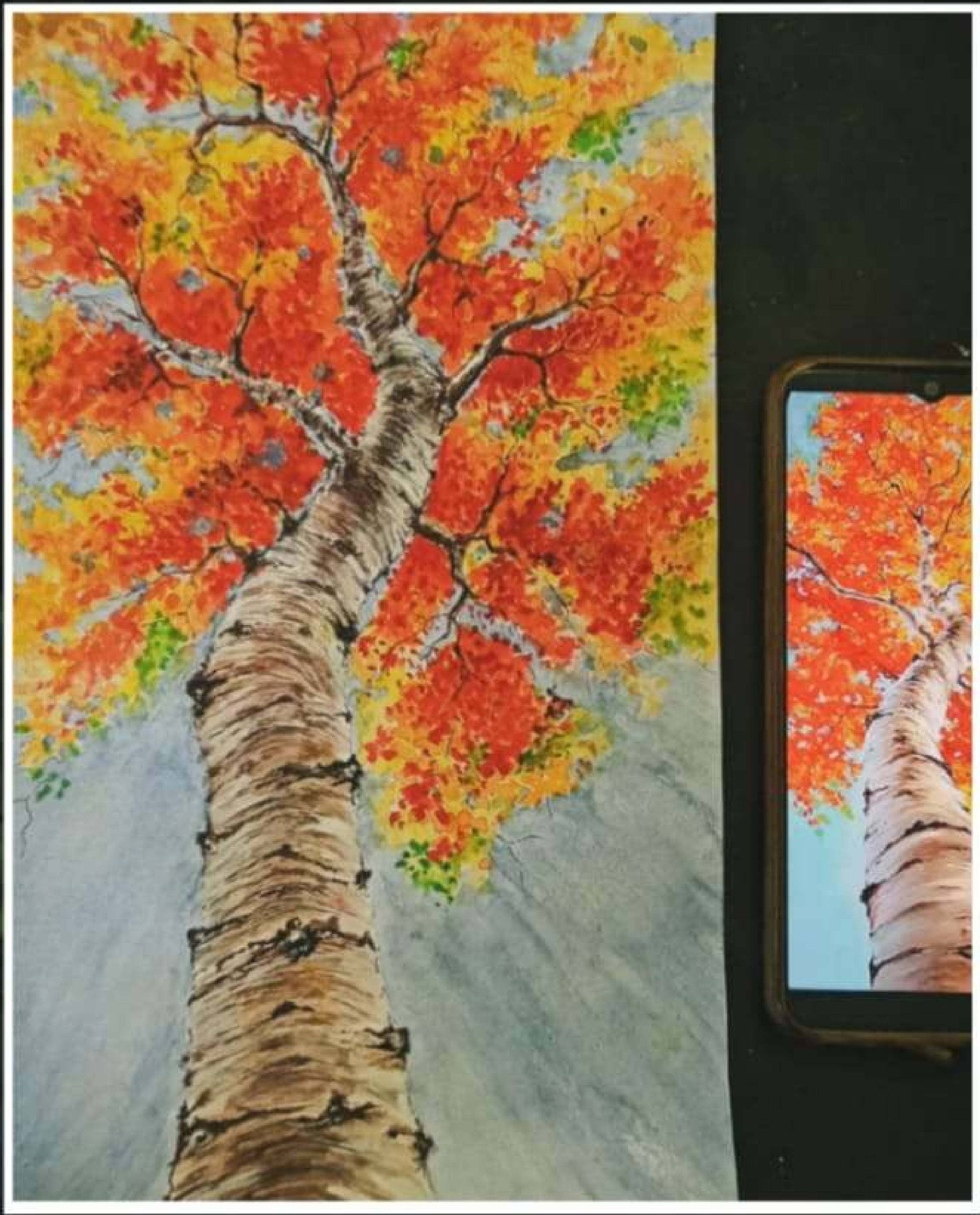

SWAPNA SUDHA
3RD DC ZOOLOGY

प्रकृति

सुन्दर सुन्दर हमारी प्रकृति
कितनी मनोहर हमारी प्रकृति
शाँत छबीली हमारी प्रकृति
कितनी प्यारी हमारी प्रकृति
बहुत ही दुलारी हमारी प्रकृति
कितनी दयालू हमारी प्रकृति
किन्तु ......

इन्सानों की मारी गई मति '
करते रहते स्वार्थ रूपी प्रगति
बढ़ गई प्रदूषण की गति
अब दया करो,
अब दया करो
मर ही है प्रकृति।

CHANDANA JANARDHANAN
1ST DC ZOOLOGY

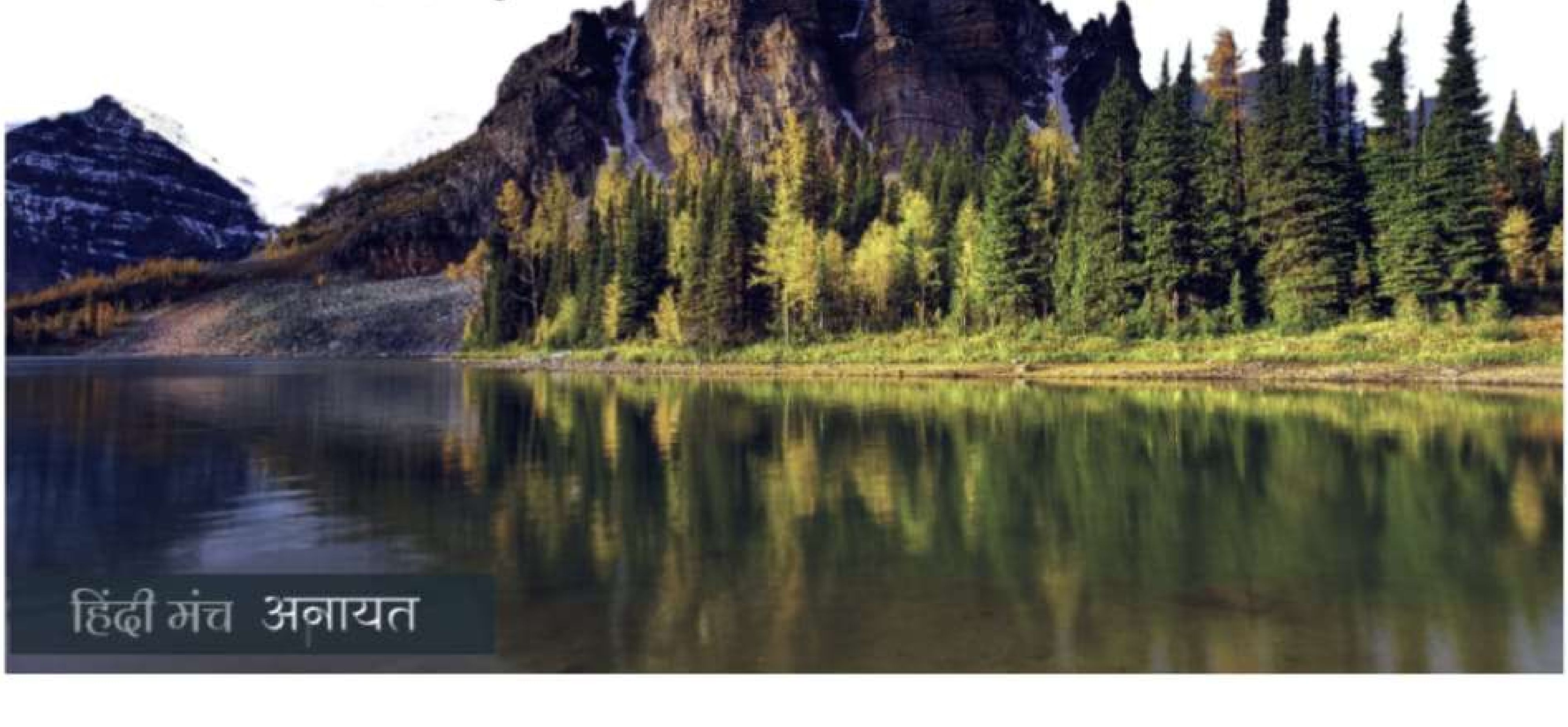

ध्यानचंद

ध्यानचंद उनके बारे मे एक बात सुनी थी ।
ध्यानचंद जिन्हे हॉकी का जादूगर भी कहा जाता है ।वे हॉकी के बड़े दीवाने थे । दिन में ही नहीं रात में भी हॉकी खेलते थे । वर्ल्ड कप फाइनल में भारत का खेल जर्मन से था । इस खेल में ध्यानचंद ने अकेले ही 15 गोल दागे और जर्मनी को हरा दिया । अपने जर्मन देश को हारता देख हिटलर ने कहा "ध्यानचंद की हॉकी को तोड़ो ,इसमें चुंबक निकलेगी ,कैसे चिपका के खेलता है " उनकी हॉकी तोड़ी गई । उसमें उन्हें चुंबक नहीं मिली । रात में हिटलर ने ध्यानचंद को अपने दफ्तर में बुलवाया । उन्होंने ध्यानचंद की तारीफ की । हिटलर ने ध्यानचंद से कहां "ध्यानचंद तुम्हारे देश ने तुम्हें क्या दिया है ? आज भी तुम सूबेदार हो ।तुम जर्मनी की टीम में रहकर खेलो , एयरफील्ड मार्शल बना दूंगा । बात देश की आ गई थी, ध्यानचंद ने इसका जवाब दिया " सर यह मेरे देश की जिम्मेदारी नहीं है मुझे आगे बढ़ाने की ।यह मेरी जिम्मेदारी है कि मैं अपने देश को आगे बढ़ाऊं, अपने देश से ही खेलूं "

AMAL KRISHNA
1ST DC INTEGRATED GEOLOGY

हिंदी मंच अनायत

दहेज

दहेज एक भयानक आग है ।
पर देह पर पडनेवाले दाग है।
दहेज एक महामारी है ।
पर समाज में फैलनेवाली बीमारी है ।
दहेज एक तलवार है ।
पर होते इससे बडे वार है।
दहेज एक घूस है ।
पर बनते इससे बेरहम कारतूस है ।
दहेज एक भूत है।
पर मौत का यह ताबूत है ।
दहेज एक घात है।
पर मौत की सौगात है ।
दहेज एक बाण है
पर स्त्रियों के लेते प्राण है ।

MERIN JOSEPH
1ST DC ECONOMICS

HARIKRISHNAN K U
2ND DC ENGLISH LITERATURE

हिंदी मंच अनायत

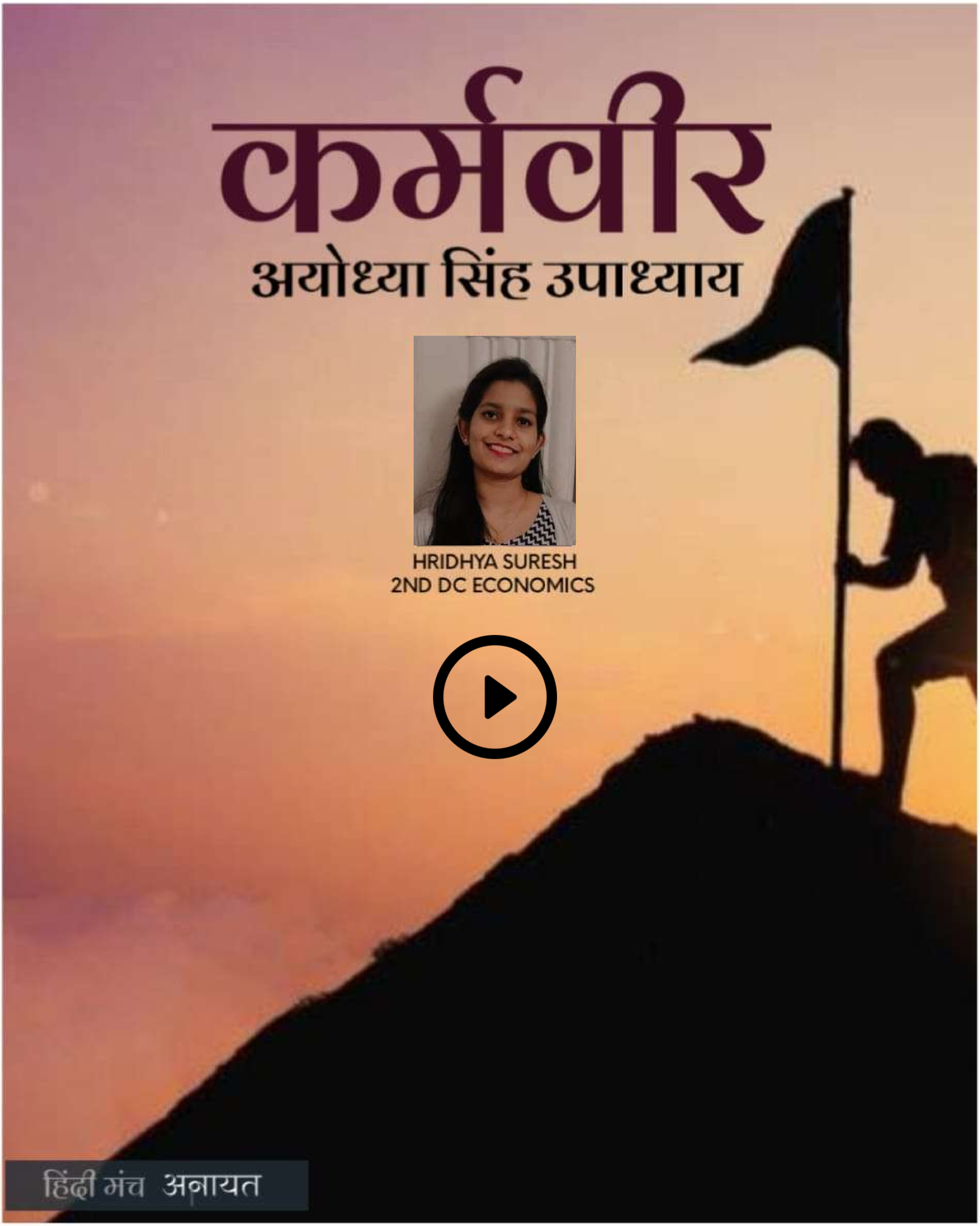
कर्मवीर
अयोध्या सिंह उपाध्याय
HRIDHYA SURESH
2ND DC ECONOMICS
हिंदी मंच अनायत

सपेरा

बना है चीन एक सपेरा ।
दक्षता से देश को है घेरा
नापाक मंसूबों का है डेरा
फैला रहा है अलगाववाद का अंधेरा
देश में होता नहीं एकता का सवेरा
नही रहा अमन का केरा
करते हैं हम तेरा मेरा
अखंडता का हो गया बघेरा
बना है चीन एक सपेरा ।

AISHWARYA K A
2ND DC BSW

ANSI[illegible]A JOLLY
IST [illegible] BCOM

बातों की मिठास , अंदर
के भेद नहीं खोलती ।
मोर को देखकर कौन
कह सकता है कि यह
साँप को भी खाता
होगा ।

KRISHNENDU KRISHNAKUMAR
1ST DC BCOM

यादें

ना जाने कैसे रोक पाओगे
ना जाने कैसे सब्र कर पाओगे
मेरे अंदर तुम बस जाओगे
मेरी साँसो की रफतार से तुम मंजिल पाओगे ।
डूबते सूर्य से शम्मा पाओगे
समंदर गहराईयों में तुम डूब जाओंगे ।
अपनी कहानी लहरो पर लिख आओगे ।
कहानी जो हमारे मन मे उपजाओगे ।
हरे भरे ही सुनहरी यादो में पाओगे ।

ANAGHA BOSH
2ND DC ENGLISH LITERATURE

हिंदी मंच अनायत

डायरी

मैसूर 21-12-2018

आज हमने मैसूर की यात्रा की | यह यात्रा केवल दसवी के छात्रों के लिए थी । मैसूर का नाम हमने बचपन में बहुत सुना था। आज हमने उसे देख भी लिया । हम सबसे पहले टोपू सुलतान के महल को देखने गये और वहाँ के हरे भरे बगीचें के बीच खूब तस्वीरे खींची। फिर हमने वहाँ के चिडिया घर देखे और बाद में चामुण्डेश्वरी मंदिर गये । वहाँ अधिक भीड़ होने के कारण हम देवी के दर्शन नहीं कर सके। मंदिर के बाहर कई दुकान लगी हुई थी। एक दुकान केअन्दर घुसे । मेरे दोस्त को एक बटुआ बहुत अच्छा लगा । उस बटुए की कीमत दुकानदार ने तीन सौ पचास रुपये बताये, | मेरे दोस्त ने दुकानदार को पाँच सौ रुपए का एक नोट दिया मगर दुकानदार ने डेढ़ सौ रुपए देने की बजाए मेरे दोस्त से पचास रुपए और माँगे । इस बात को लेकर दोस्त और दुकानदार के बीच झगड़ा हो गया । इस झगड़े को देखकर हमारी हिंदी अध्यापिका हमारे पास आयी और झगड़े का कारण पूछा । हमने सारी बात बता दी । अध्यापिका ने दुकानदार बटुए की रकम पूछी तो उसने कहा मॉडम पियन्सौ पचास रुपए |

दुकानदार की बात सुनकर अध्यापिका को सारी बात समझ में आ गई। उन्होने हमसे कहा कि दुकानदार ने पाँच सौ पचास रुपए ही बताए थे मगर वे लोग मारवाड़ी है -उसी शैली में ही बोलेंगे । उनका पियन्सौ रुपए हमें तीन सौ रुपए सुनाई देगा । जीवन में पहली बार ऐसा सबक सीखने को मिला कि जल्दबाजी में सुना हुआ कभी ठीक नही होता | यह हम अपने जीवन में कभी नहीं भूलेंगे ।

NEERAJ RAMACHANDRAN
1ST DC CHEMISTRY

SONIYA S MANJALY
2ND DC ZOOLOGY

सितारे

सुंदरता उसकी मंत्रमुग्ध करती ।
ऊपर नभ में हर्ष से देखती |
अपनी आत्मा को मुक्त ही पाती ।
सितारों में उज्जवल ज्योत्सना आती ।
अंधेरी रातों में तुम से बतियाती ।
भावविभोर होकर गीत गाती ।
अंधेरे हृदय में प्रकाश जलाती ।
सितारों की मुस्कान चारों ओर फैलाती ।

ADHITHI JINAN
2ND DC ENGLISH LITERATURE

झरोखा

झरोखे से देखा मैंने चाँद को
चाँदनी बहती रही रात को
तारों की झुरमुट चमकते रहे साथ वो
चाँद चाँदनी और तारों की रात वो
रोशनी छन्कर आती है रात को
तालाब भी दर्पण लगे चाँद को
हवा भी झुमाती रही वृक्षों की डाल को
कितना सुन्दर, कितना मनोहर
कितना खूबसूरत लग रही है रात वो।

GLADWIN V J
1ST DC CHEMISTRY

हरेकाला हजब्बा

'संतर बेचने वाले 'अक्षर संत' को राष्टपति से पद्मश्री मिला' - ये कौन है?
 हरेकाला हजब्बा का जन्म कर्नाटक के ग्रामीण प्रदेश मे एक बेहद निर्धन परिवार में हुआ था। मात्र छः साल की उम्र में ही हरेकाला हजब्बा अपने परिवार की मदद करने के लिए अपनी माँ के साथ बीडी बनाने का काम करने लगे थे। एक बेहद गरीब परिवार में जन्म होने के कारण वे कभी स्कूल नहीं जा पाए। शिक्षा की कमी के कारण उन्हें जीवन में कई परेशानियाँ का सामना करना पड़ा। इसलिए वे निरक्षर होते हुए भी शिक्षा के महत्व को अच्छी तरह से समझते थे। बड़े होने के बाद हरेकाला हजब्बा ने संतरे बेचने शुरू कर दिया। इससे वह रोजाना लगभग 150 रु की कमाई करते थे। संतरे बेचकर उसे जैसे- तैसे अपने परिवार का जीवन यापन कर रहे थे।
एक बार एक विदेशी जोडा हरेकाला हजब्बा के पास संतरे लेने के लिए आया। उस जोड़े ने हजब्बा से फलों का दाम पुछा । अंग्रेजी ना आने के कारण हरेकाला हजब्बा उन्हें संतर का दाम नहीं समझा पाया । हरेकाला हजब्बा के अनुसार उस समय उन्होंने खुद को असहाय महसूस किया और प्रण लिया कि वह अपने गाँव के बच्चों की शिक्षा के लिए कुछ करेंगे ताकि आगे किसी बच्चे को ऐसी स्तिथि का सामना नहीं करना पड़े।

हिंदी मंच अनायत

एक बार एक विदेशी जोडा हरेकाला हजब्बा के पास संतरे लेने के लिए आया। उस जोड़े ने हजब्बा से फलों का दाम पुछा । अंग्रेजी ना आने के कारण हरेकाला हजब्बा उन्हें संतर का दाम नहीं समझा पाया । हरेकाला हजब्बा के अनुसार उस समय उन्होंने खुद को असहाय महसूस किया और प्रण लिया कि वह अपने गाँव के बच्चों की शिक्षा के लिए कुछ करेंगे ताकि आगे किसी बच्चे को ऐसी स्तिथि का सामना नहीं करना पड़े। इस समय उनके पास रहने केलिए खुद का घर तक नहीं था। लेकिन फिर भी उन्होंने अपनी सारी मेहनत की कमाई लगाकर साल 1999 में एक छोटे से स्कुल की शुरूआत की । कुछ ही बच्चे स्कुल आते थे, लेकिन धीरे-धीरे ज्यादा बच्चे आने लगे थे। इस के बाद थोड़ा-थोड़ा पैसा जोड़कर और लोगों से मदद लेकर हरेकाला हजब्बा ने 2004 में दक्षिण कतड़ जिला पंचायत उच्च प्राथमिक विद्यालय शुरू किया। बच्चे को पढ़ाने केलिए स्कूल में चार शिक्षक थे। आगे चलकर सरकार की तरफ से भी हरेकाला हजब्बा को मदद मिली। प्राथमिक विद्यालय के रूप में शुरू हुआ उनका स्कुल आगे चलकर 1 एकड़ से अधिक भुमि क्षेत्र में खड़े एक माध्यमिक विद्यालय के रूप में विकसीत हुआ हरेकाला हजब्बा का सपना है कि आगे चलकर वह अपने गाँव में एक फ्री- यूनिवर्सिटी कॉलेज की स्थापना कर पाए । हरेकाला हजब्बा भले ही खुद कभी स्कुल ना जाए पाए, लेकिन उन्होंने शिक्षा के महत्व को समझा और अपना सबकुछ बच्चों की शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया।

भारत सरकार ने 2020 मे हरेकाला हजब्बा को देश के चौथे सर्वोच्च नागरीक पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित करने के लिय चुना था | हालिक कोरोना के कारण उन्हें यह सम्मान साल 2021 में दिया गया ।

LINUS C LIJU
2ND DC PHYSICS

फतिंगा

पराग रस को खोजा करता ।
हर दम वह मधुपान करता ।
कीट वर्ग का सामान्य प्राणी-स लगता ।
दिमाग नहीं इसका थकता ।
देखने , सूँघने ' चखने और पहचाने की क्षमता है
रखता ।
अंडो से निकलकर गाँठकर ढोले से रहता ।
ढोले से रूपांतरित फतिंगे का
रूप धरता ।
पँख बूटियों से भरा रहता
फतिंगा हर दम मधुपान करता।

ARYADAS K H
2ND DC PHYSICS

हिंदी मंच अनायत

RABECA SHAIGY
1ST DC ECONOMICS

प्यार

प्यार तो प्यार है ।
होता यह एक बार है ।
होती उसमे तकरार है ।
उसमें तेज धार है।
दिल पर होते कई वार है ।
यह तो एक गार है।
जाने कितनी पड़ती मार है ।
फिर भी ..
लगाते प्यार की गुहार है ।
प्यार तो प्यार हैं

SOORYANE K S
2ND DC INTEGRATED GEOLOGY

हिंदी मंच अनायत

उज्जैन

उज्जैन मध्य भारतीय राज्य मध्य प्रदेश में क्षिप्रा नदी के किनारे एक प्राचीन शहर है। एक महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थस्थल, यह सदियों पुराने महाकालेश्वर मंदिर, एक विशिष्ट अलंकृत छत के साथ एक विशाल संरचना के लिए जाना जाता है। पास में, बड़े गणेश मंदिर में हाथी के सिर वाले हिंदू देवता गणेश की एक रंगीन मूर्ति है। हरसिद्धि मंदिर में दीयों से जड़े लंबे काले स्तंभों की एक जोड़ी है

यह हर 12 साल में आयोजित होने वाले कुंभ मेले के लिए प्रसिद्ध सप्त पुरी के हिंदू तीर्थस्थलों में से एक है।

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग का प्रसिद्ध मंदिर शहर के मध्य में स्थित है। उज्जैन शैवों, वैष्णवों और शाक्त के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान बना हुआ है। चौथी शताब्दी के खगोलीय ग्रंथ, सूर्य सिद्धांत के अनुसार, उज्जैन भौगोलिक रूप से ठीक उसी स्थान पर स्थित है जहां देशांतर का शून्य मेरिडियन और कर्क रेखा प्रतिच्छेद करती है। यही कारण है कि इसे पृथ्वी की नाभि माना जाता था, और इसे "भारत का ग्रीनविच" कहा जाता है।

BHAVAN K S
1ST DC FOOD TECHNOLOGY

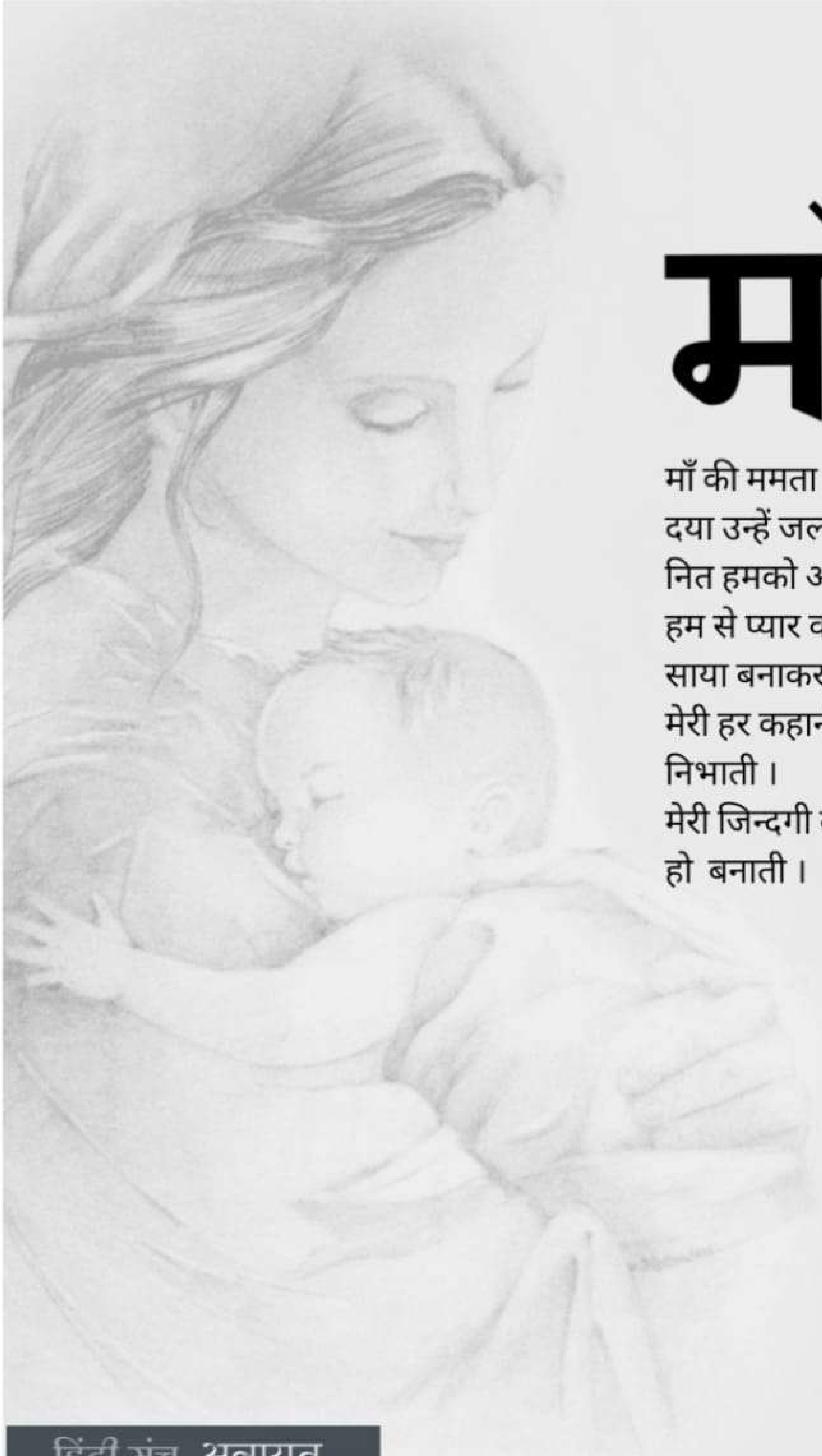

माँ

माँ की ममता ,करुणा की भाँति
दया उन्हें जल्दी है आती
नित हमको अमृत रूपी भक्ति देती।
हम से प्यार वह है जताती
साया बनाकर साथ वह आती ।
मेरी हर कहानी का किरदार तुम
निभाती ।
मेरी जिन्दगी का इतिहास तुम
हो बनाती ।

ANSILA JOLLY
1ST DC BCOM

LAKSHMIPRIYA S MENON
2ND DC GEOLOGY

कोयल

वसंत ऋतु आती है ।
हरियाली छा जाती है ।
जब कोयल गीत सुनाती है ।
मधुमास में धूम मच जाती है ।
डाल - डाल पर गाती है ।
सब के मन को भाँती है ।
शाँति का सन्देश हर जगह
सजाती है ।

ANJALI T J
1ST DC ECONOMICS

मेरा प्रदेश कषिम्ब्रम्

केरळ राज्य के अपने अपने हर प्रदेश की बात खास होती है। ऐसा ही एक प्रदेश है कषिम्ब्रम् | उस प्रदेश की बात ही निराली है। इस प्रदेश में चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। यहाँ के लोग प्रकृति स्नेही है। इसलिए बड़ी तादाद में वृक्षों को लगाया जाता है । यहाँ ज्यादातर बरगत के पेड देखे जा सकते हैं। इन वृक्षो के चारो चबूतरे बनाये जाते है । उन चबूतरों पर सब लोग आकर बैठते हैं और बच्चों की टोली उन पर बैठकर कई खेल खलते हैं। लोग कहते हैं कि बरगत के पेड के नीचे बैठने से बुद्धि का विकास होता है। हमारे कषिम्ब्रम एक सौ अस्सी साल पुराना स्कूल है। जिसका नाम वी पी एम एस एन डी. पी. एच एस एस है। इसी प्रदेश में सुब्रमण्यम भगवान का पुराना मंदिर है। इस मंदिर में हर साल उत्सव मनाया जाता है लोग इस उत्सव विभिन्न धर्म के से जोर शोर से शामिल होते हैं। जिससे उत्सव की शोभा बढ़ जाती है । हमारे इसी प्रदेश में सागर का तट पड़ता है। सुबह हो या शाम लोग यहाँ घूमने आते हैं। समुद्र को आप जितना देखो उस से मन भरता ही नहीं है। आप जब भी यहाँ घूमन आयेंगे । 'आपको यहाँ अपनापन सा लगेगा ।

RINSHA RADHAKRISHNAN
1ST DC BCOM

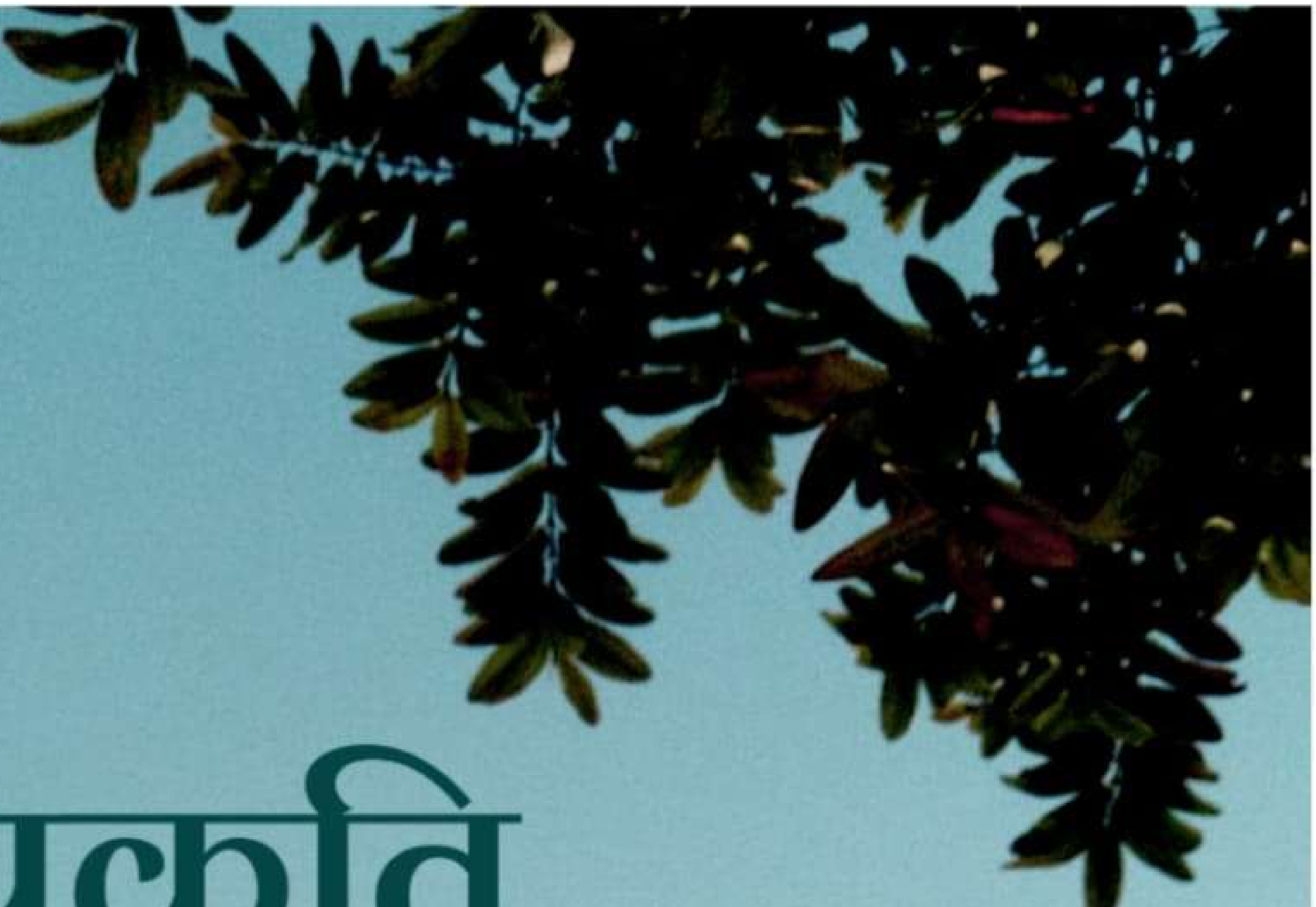

प्रकृति

सुन्दर रूप इस धरा का,
आँचल जिसका नीला आकाश,
पर्वत जिसका ऊंचा, मस्तक
चाँद सूरज बिंदियो का ताज
नदियाँ - झरने छलकते यौवन
सतरंगी पुष्प - लताओं का किया श्रृंगार
खेत खलिहाने बिखेरती मुस्कान
यही तो हैं हमारा हिन्दुस्तान
इस प्रकृति का स्वच्छन्द स्वरूप
प्रफुल्लित जीवन का निशचल रूप

DISNA T A
1ST DC FOOD TECHNOLOGY

SWAPNA SUDHA
3RD DC ZOOLOGY

हिंदी मंच अनायत

हताशा और निराशा को वे जानती है।
मुरझाये हुए चेहरों को वे पहचानती है।
चाहे आकाश गिरे या बिजली ...
हमारी षीबा जी हाथ बढाना जानती है।
यही उनकी गरिमा की कान्ति है।

SREE NANDANA T B
1ST DC ZOOLOGY

धन्यवाद

हिंदी मंच अनायत